04 - लोकतंत्र, अल्पसंख्यक और समानता के अवसर

05 - भारतीय समाचार पत्रों की भूमिका ऐतिहासिक

A Daily News Magazine

भोपाल

गुरुवार, 29 जनवरी, 2026

06 - नई खदानों से 10 लाख घनमीटर निकलेगी रेत, सिया की अनुमति...

07 - इछावर में 200 जोड़ों का सामूहिक कन्या विवाह एवं निकाह सम्पन्न

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 149, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ईयू और भारत के एफटीए में ट्रंप के लिए क्या संदेश है?

रजनीश कुमार

भारत अमेरिका में अपना सामान बेचने के लिए 50 प्रतिशत टैरिफ़ दे रहा है और यूरोपियन यूनियन के 27 देश 15 प्रतिशत। अब भारत और ईयू ने फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफ़टीए) की घोषणा की है और इसे अमेरिका को संदेश देने के रूप में देखा जा रहा है। अमेरिका इसे लेकर हमलावर दिख रहा है। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने 24 जनवरी को कहा, 'यूरोप के हमारे सहयोगियों ने रूस से तेल ख़रीदने के बदले भारत पर टैरिफ़ लगाने से इनकार कर दिया था, क्योंकि उन्हें भारत से बड़ा व्यापार समझौता करना था। यूरोप यूक्रेन के खिलाफ़ रूस की जंग में खुद ही मदद कर रहा है।' अमेरिका चाहता था कि यूरोप भी भारत के खिलाफ़ टैरिफ लगाए लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

पिछले महीने ही रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन नई दिल्ली आए थे और अगले महीने यूरोपियन यूनियन (ईयू) के शीर्ष के नेता आए। अमेरिकी की अल्बनी यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान के प्रोफ़ेसर क्रिस्टोफ़र क्लैरी ने ईयू-इंडिया एफ़टीए को लेकर एक्स पर लिखा है, 'ईयू-भारत व्यापार समझौता इस बात की याद दिलाता है कि अन्य देशों के पास भी विकल्प मौजूद हैं। अगर अमेरिका आर्थिक दबदबे के आधार पर कोई टैरिफ नीति बनाता है और उसका ग़लत इस्तेमाल करता है तो उसका यह दबाव भी बेकार जाएगा। अमेरिकी मनमानी को लेकर दुनिया का प्रतिरोध अब लगातार बढ़ रहा है।'

सामरिक मामलों के जाने-माने विशेषज्ञ ब्रह्मा चेलानी भी मानते हैं कि इससे भारत की अमेरिका पर निर्भरता कम होगी। चेलानी ने एक्स पर लिखा है, 'यह रणनीतिक बीमा की तरह है जो भारत और ईयू को चीन के सरकार केंद्रित व्यापार मॉडल के मुक़ाबले एक लोकतांत्रिक संतुलन के रूप में स्थापित करता है और टैरिफ़ को हथियार बनाने की ट्रंप की रणनीति को कमज़ोर करता है। यह समझौता अमेरिका और चीन दोनों पर भारत की निर्भरता को कम करता है।'

'द हिन्दू' की डिप्लोमैटिक अफेयर्स एडिटर सुहासिनी हैदर ने एक्स पर लिखा है, 'गणतंत्र दिवस की परेड में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता पूरी तरह प्रदर्शित हुई। मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद यूरोपीय संघ के नेताओं के सामने रूसी सैन्य हार्डवेयर/डिज़ाइन, जिनमें एस-400 मिसाइल सिस्टम, टी-90 टैंक और संयुक्त रूप से निर्मित ब्रह्मोस मिसाइलों का प्रदर्शन किया गया।'

ट्रंप और यूरोप दोनों चाहते हैं कि रूस से भारत की क़रीबी कम हो लेकिन यूरोप ने भारत पर दबाव डालने के लिए अमेरिका की तरह टैरिफ़ नहीं लगाया था। दिल्ली स्थित ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि अमेरिका में कूटनीतिक माहौल अब पहले जैसा नहीं रहा है। ट्रंप प्रशासन का ध्यान घरेलू राजनीति और लेन-देन आधारित रिश्तों पर है, जिससे सहयोग की पारंपरिक परिभाषाएं कमज़ोर हुई हैं। भारत अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखना चाहता है लेकिन साथ ही वह यह भी समझता है कि मौजूदा हालात में ज़्यादा निर्भरता जोखिम भरी हो सकती है। ट्रंप की विदेश नीति में निरंतरता की कमी रही है। इससे भारत के लिए लंबी अवधि की रणनीति बनाना मुश्किल हो जाता है। भारत हर वक़्त अमेरिकी असहजता के सामने झुकता नहीं रहेगा। हालांकि मेरिका हर देश के लिए बहुत बड़ा बाज़ार है। अमेरिका को भारत का निर्यात पिछले दो महीने में 20 प्रतिशत गिरा है। ईयू से एफ़टीए लागू होने के बाद भारत का निर्यात बढ़ेगा और ट्रंप के टैरिफ़ का दबाव कम होगा। भारत ने ट्रंप के कारण ही कई सुधारों को लागू करना शुरू कर दिया है।''

इससे पहले, भारत ओमान, न्यूज़ीलैंड और ब्रिटेन से एफ़टीए कर चुका है। ईयू से एफ़टीए पर बात वर्षों से चल रही थी लेकिन मुहर तब लगी, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों के कारण दुनिया भर में उथल-पुथल है। भारत और और ईयू दोनों अमेरिका के साथ चीन पर निर्भरता कम करना चाहते हैं। पहले भारत के बारे में कहा जाता था कि वह संरक्षणवादी नीति पर चलता है। अब भारत अपनी उस छवि को पीछे छोड़ता दिख रहा है।

भारत के लिए यह किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है कि ट्रंप की नीतियों से होने वाले नुक़सान को बेअसर कर दे और रूस से संबंध मज़बूत रखते हुए ईयू के साथ अपने हक़ में एफ़टीए कर ले। इंस्टीट्यूट ऑफ़ साउथ एशियन स्टडीज़ में व्यापार और अर्थशास्त्र के रिसर्च प्रमुख अमितेंदु पालित ने कहा कि किसी एक पर निर्भरता ख़त्म करना बिल्कुल अनिवार्य हो गया है। अमेरिका के 50 फ़ीसदी टैरिफ के बाद भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नए बाज़ार तलाशने की कोशिश कर रहे हैं। एमकाय ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड की मुख्य अर्थशास्त्री माधवी अरोड़ा की एक रिपोर्ट बताती है कि ईयू के साथ एफ़टीए से 2031 तक ईयू में भारत का निर्यात 50 अरब डॉलर तक बढ़ सकता है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि ईयू के साथ एफ़टीए से भारत के फार्मा, टेक्सटाइल और केमिकल सेक्टर को सीधा फ़ायदा होगा।

पिछले वित्त वर्ष में यूरोपीय संघ और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार 136.5 अरब डॉलर का रहा, जिसमें भारत के कुल निर्यात में यूरोपीय संघ की हिस्सेदारी 17 प्रतिशत से अधिक थी। भारत यूरोपीय संघ का नौवां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। यूरोपीय संघ को सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक तक पहुंच मिलेगी. भारत 1.4 अरब से अधिक लोगों का बाज़ार है। 2024-25 में भारत और अमेरिका का द्विपक्षीय व्यापार 131.84 अरब डॉलर का था। अमेरिका के साथ पिछले वित्त वर्ष में भारत का 41.18 अरब डॉलर का ट्रेड सरप्लस था। राष्ट्रपति ट्रंप को यही पसंद नहीं है और वह चाहते हैं कि ट्रेड सरप्लस अमेरिका के पक्ष में हो। ट्रंप का टैरिफ़ अमेरिका में भारत का निर्यात 52 प्रतिशत तक कम कर सकता है और इससे भारत की जीडीपी मध्यम अवधि में 0.8 फ़ीसदी कम हो सकती है। अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि ट्रंप के टैरिफ़ के कारण 41 अरब डॉलर ट्रेड सरप्लस बुरी तरह से प्रभावित होगा लेकिन भारत इस नुक़सान की भरपाई अगले एक दो सालों में कर लेगा। श्रीवास्तव कहते हैं, 'यूरोपीय अर्थव्यवस्थाएँ भारत के लिए अमेरिका की तुलना में अधिक लाभकारी हो सकती हैं। न्यूज़ीलैंड और भारत ने पिछले महीने दिसंबर में फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफ़टीए) की घोषणा की थी। पिछले साल मई महीने में भारत और ब्रिटेन के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट हुआ था। ब्रिटिश सरकार के अनुसार, यह समझौता द्विपक्षीय व्यापार को 34 अरब डॉलर तक बढ़ाएगा। पिछले साल दिसंबर में ही भारत ने ओमान के साथ एफ़टीए किया था। ऐसी ही डील ब्राजील और कनाडा के साथ भी हो सकती है।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

जयपुर में एयर इंडिया की फ्लाइट रनवे टच कर फिर उड़ी

- 10 मिनट बाद सफल लैंडिंग, प्लेन में थे कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर रंधावा

जयपुर (एजेंसी)। दिल्ली से जयपुर पहुंची एयर इंडिया की फ्लाइट ए - 1719 की लैंडिंग फेल होने से दहशत फैल गई। बुधवार दोपहर को विमान रनवे को टच करते ही वापस उड़ गया। जानकारी के अनुसार फ्लाइट में कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा भी थे। रंधावा पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम व गुरदासपुर से कांग्रेस सांसद हैं। हालांकि, करीब 10 मिनट बाद दूसरे प्रयास में विमान की सुरक्षित लैंडिंग

करा ली गई। जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पहले भी लैंडिंग फेल होने की घटनाएं सामने आई हैं। दरअसल, फ्लाइट ए - 1719 ने दोपहर करीब 1 बजकर 5 मिनट पर जयपुर एयरपोर्ट पर लैंडिंग का प्रयास किया था। इस दौरान पायलट ने रनवे को छूते ही विमान को दोबारा हवा में उठा लिया। अस्थिर अप्रोच के कारण पायलट ने सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए 'गो-अराउंड' का फैसला लिया। पहले प्रयास के बाद विमान ने एयरपोर्ट के ऊपर कुछ देर तक गोल चक्कर लगाया।

नहीं रहे अजित 'दादा'

- महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार का प्लेन क्रैश में निधन
- विमान में सवार सभी 5 लोग मारे गए, बारामती में हुआ हादसा
- लैंडिंग की दूसरी कोशिश में फिसला, जलकर हो गया खाक

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार का निधन हो गया है। बुधवार सुबह 8.45 बजे बारामती एयरपोर्ट पर लैंडिंग के दौरान उनका चार्टर्ड प्लेन क्रैश हो गया। वे 66 साल के थे। हादसे में पवार के सुरक्षाकर्मी, दो पायलट और एक महिला क्रू मेंबर समेत 5 लोगों की जान गई। पवार महाराष्ट्र पंचायत चुनाव के लिए जनसभा को संबोधित करने बारामती जा रहे थे। वे मुंबई से सुबह 8.10 बजे रवाना हुए थे। महाराष्ट्र एविएशन डिपार्टमेंट के मुताबिक पायलट ने सुबह 8.45 बजे बारामती एयरपोर्ट पर लैंडिंग की कोशिश की थी, लेकिन रनवे साफ दिखाई नहीं दिया तो वह विमान को दोबारा ऊंचाई पर ले गया। पहली कोशिश नाकाम रहने के बाद बारामती के रनवे-11 पर दोबारा लैंडिंग की कोशिश की गई। इस दौरान विमान रनवे से फिसलकर क्रैश हो गया। और उसमें आग लग गई। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक लैंडिंग के दौरान पायलट ने कोई इमरजेंसी सिग्नल नहीं दिया था। उसने मेडे कॉल भी नहीं किया था।

- पीएम मोदी और अमित शाह अंतिम संस्कार में होंगे शामिल -रिपोर्ट्स के मुताबिक अजित पवार का अंतिम संस्कार कल बारामती में किए जाने की संभावना है। उनके अंतिम संस्कार में पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह शामिल होंगे। वे कल बारामती पहुंचेंगे। मुंबई में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि बुधवार को राज्य में स्कूल-कॉलेज समेत सभी संस्थानों में छुट्टी घोषित की है। साथ ही 3 दिन के राजकीय शोक की भी घोषणा की गई है। पवार के अंतिम संस्कार का फैसला उनके परिवार से सलाह लेने के बाद किया जाएगा। फडणवीस ने कहा- मैंने सुप्रिया ताई (सुप्रिया सुले) और पार्थ पवार से बात की है। एक बार जब हम बारामती पहुंच जाएंगे, तो हम परिवार के सदस्यों से बात करेंगे, और फिर हम उनके अंतिम संस्कार के बारे में कुछ फैसला होगा।

शासकीय विद्यालयों का परीक्षा परिणाम हुआ बेहतर, बढ़ रहा है नामांकन : मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश में इसी सत्र से खोले जाएंगे 200 नये सांदीपनि विद्यालय

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि युग बदले, सदियां बदलीं पर शिक्षकों का सम्मान कभी कम नहीं हुआ। शिक्षक उस दीपक के समान होते हैं, जो खुद जलकर दूसरों के जीवन को आलोकित करते हैं। शिक्षकगण सदैव सम्मानित थे, हैं और आगे भी रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश के शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि इनके सद्प्रयासों से ही प्रदेश के शासकीय स्कूलों का परीक्षा परिणाम ऐतिहासिक रूप से बेहतर से और बेहतर हुए हैं। बच्चों के प्रवेश, शाला नामांकन दर में भी रिकार्ड वृद्धि हुई है। साथ ही प्रदेश में बच्चों की ड्राप-आउट दर भी शून्य हो गई है। इसमें शिक्षकों का योगदान अतुलनीय है, वंदनीय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को शासकीय सुभाष उत्कृष्ट विद्यालय के प्रांगण में मध्यप्रदेश शिक्षक संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता शिक्षक सम्मेलन में कहा कि हमारे सांदीपनि विद्यालय और पीएमश्री विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता के नए-नए मानक स्थापित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सांदीपनि विद्यालयों की सफलता से हम सब अभिभूत हैं। इसलिए प्रदेश में इसी सत्र से 200 नए सांदीपनि विद्यालय खोले जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नई शिक्षा नीति-2020 को लागू करने में मध्यप्रदेश देश के पहले राज्यों में हैं। हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए ए.आई., कोडिंग और कौशल आधारित शिक्षा की दिशा में भी तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। इसमें शिक्षकों का बहुमूल्य योगदान है। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षकों के हित में सरकार ने कोई कमी नहीं रखी है। आगे भी जो कुछ हित लाभ बचा है, वह भी जल्द ही देंगे।

सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान कर लिया आशीर्वाद

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सेवानिवृत्त व्याख्याता कोकिला सेन, बद्री प्रसाद तिवारी, बृजमोहन आचार्य, देवकृष्ण व्यास, किशनलाल नाकड़ा को सम्मानित किया। कोकिला सेन ने उज्जैन में मुख्यमंत्री डॉ. यादव को भौतिक शास्त्र की शिक्षा दी थी। मुख्यमंत्री ने अपनी गुरु का सम्मान कर उनके चरण छूकर उनका आशीर्वाद लिया। इसी तरह बद्री प्रसाद तिवारी ने नरसिंहपुर में स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह को स्कूल में पढ़ाया था।

शरद की सुबह

खुशबू सी आ रही है
इधर ज़ाफ़रान की
खिड़की खुली है ग़ालिबन
उनके मकान की
हारे हुए परिन्दे ज़रा
उड़ के देख तो
आ जायेगी ज़मीन पे
छत आसमान की
बुझ जाये सरे आम ही
जैसे कोई चराग़
कुछ यूँ है शुरुआत
मेरी दास्तान की
ज्यों लूट ले कहार ही
दुल्हन की पालकी
हालत यही है आजकल
हिन्दुस्तान की
औरों के घर की धूप
उसे क्यूँ पसंद हो
बेची हो जिसने रौशनी
अपने मकान की
जुल्फ़ों के पेंचो-ख़म में
उसे मत तलाशिये
ये शायरी ज़बां है
किसी बेज़बान की
'नीरज' से बढ़कर
और धनी है कौन
उसके हृदय में पीर है
सारे जहान की

- गोपालदास नीरज

जनगणना 2027 के दूसरे चरण में होगी जाति जनगणना

- गृह मंत्रालय का स्पष्टीकरण- कुछ लोग सिर्फ भ्रम फैला रहे हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्रालय ने मंगलवार को स्पष्ट किया कि जनगणना 2027 के दूसरे चरण में जाति जनगणना भी की जाएगी। सरकार ने कहा कि देश भर में फरवरी 2027 से जनगणना शुरू हो जाएगी। गृह मंत्रालय ने कहा कि जनगणना 2027 के बारे में पूरी जानकारी 12 दिसंबर, 2025 को एक प्रेस नोट के माध्यम से जारी की गई थी। फिर भी, कुछ लोग जानबूझकर जनगणना-2027 और विशेष रूप से जाति जनगणना के बारे में भ्रम

फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। दरअसल, सपा चीफ अखिलेश यादव ने × पर एक पोस्ट में दावा किया था कि भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) का जाति जनगणना कराने का कोई इरादा नहीं है। पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समुदाय को धोखा दिया है।जनगणना नोटिफिकेशन में जाति के लिए कोई कॉलम ही नहीं है। मंत्रालय ने आगे बताया कि जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के बर्फ से ढके क्षेत्रों और गैर-समकालिक क्षेत्रों सितंबर, 2026 में ही इसे पूरा किया जाएगा।

किसान कल्याण स्वाभिमान पर्व क्विज का प्रथम चरण 15 मार्च तक

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किसानों के कल्याण, स्वाभिमान और समृद्धि के लिए संचालित योजनाओं को व्यापक जन जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग अंतर्गत वीर भारत न्यास एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग द्वारा एक अभिनव और ऐतिहासिक पहल की है। वर्ष 2026 को किसान कल्याण स्वाभिमान पर्व के रूप में मनाते हुए प्रदेश में लोक और जनजातीय कलाओं के बहुरंगी उत्सव के साथ एक विशाल राज्य स्तरीय इनामी क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता का प्रथम चरण 15 मार्च 2026 तक चलेगा। इस प्रतियोगिता के विजेताओं को लगभग 6.50 करोड़ राशि के ट्रैक्टर, बुलेट मोटरसाइकिल, ई स्कूटर एवं अन्य आकर्षक पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। यह जानकारी संस्कृति संचालनालय के संचालक एन.पी. नामदेव एवं मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार एवं वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने प्रेस को संबोधित करते हुए दी।

श्रीराम तिवारी ने बताया कि किसान कल्याण स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत बुंदेलखंड, बघेलखंड, मालवा, निमाड़ और महाकौशल अंचलों में वर्ष भर लोक एवं जनजातीय कलाओं के माध्यम से कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इन आयोजनों के माध्यम से खेती, किसान जीवन, परंपरा और आधुनिक सरकारी योजनाओं का रचनात्मक संगम प्रस्तुत किया जायेगा, जिससे किसान अपनी संस्कृति से जुड़ते हुए समकालीन योजनाओं की जानकारी भी प्राप्त कर सकें।

न्यासी सचिव ने कहा कि इस पर्व की एक प्रमुख विशेषता है प्रदेश स्तरीय 6.50 करोड़ रुपये के इनामी ऑनलाइन क्विज़ का आयोजन, जो विशेष रूप से मध्यप्रदेश के किसानों की समृद्धि एवं स्वाभिमान के लिए ही है। इस क्विज़ का प्रथम चरण 15 मार्च 2026 चलेगा तक और इसे पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया जा रहा है। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए किसानों को पंचायत स्तर के किसान विकास केंद्रों, कृषि मंडियों एवं संबंधित शासकीय तंत्र से आवश्यक सहयोग और मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जायेगा, ताकि तकनीकी या सूचना के अभाव में कोई भी किसान पीछे न रह जाये।

क्विज के अंतर्गत प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री द्वारा किसानों के लिए संचालित योजनाओं पर आधारित रोचक और ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे जायेंगे। इनमें प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री सिंचाई योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना, भावांतर भुगतान योजना, गोपालन योजना सहित अन्य महत्वपूर्ण योजनाएँ शामिल हैं।

मुख्यमंत्रीजी के संस्कृति सलाहकार ने बताया कि प्रथम पुरस्कार के रूप में 55 ट्रैक्टर, द्वितीय पुरस्कार के रूप में 55 बुलेट मोटरसाइकिल, तृतीय पुरस्कार के रूप में 55 ई स्कूटर इसके साथ ही 55 किसान विकास केन्द्र, 55 कृषि उपज मंडी को नगद राशि रूपये 11,000/- (प्रत्येक जिले में एक-एक) प्रदान किए जायेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य आकर्षक पुरस्कार भी किसानों को दिए जायेंगे। विजेताओं का चयन जिलावार लॉटरी सिस्टम के माध्यम से किया जायेगा, जिससे प्रदेश के विभिन्न अंचलों के किसानों को समान अवसर मिल सके। यह प्रतियोगिता संस्कृति विभाग अंतर्गत वीर भारत न्यास, संस्कृति संचालनालय, जनसंपर्क विभाग द्वारा किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, संचालनालय कृषि अभियांत्रिकी तथा कृषि उद्योग विकास परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित की जा रही है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 29 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अर्थव्यवस्था-रोजगार पर फोकस और पूर्वी भारत के विकास पर जोर

● राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का संसद में संबोधन,विपक्ष का वीबी जी राम जी का विरोध

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के बजट सत्र 2026-27 की शुरुआत राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संबोधन से हुई। लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने सरकार की प्राथमिकताओं, उपलब्धियों और आगे की दिशा को साफ शब्दों में रखा है। विपक्ष के हंगामे के बीच शुरू हुए इस भाषण में सामाजिक न्याय, अर्थव्यवस्था, अंतरिक्ष, पूर्वी भारत और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अहम मुद्दे छाए रहे। बजट सत्र दो चरणों में आयोजित किया जा रहा है।

पहला चरण बुधवार से शुरू होकर 13 फरवरी तक चलेगा, जबकि दूसरा चरण 9 मार्च से शुरू होकर 2 अप्रैल तक चलेगा, जिसमें बजट पर विस्तृत चर्चा होगी। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने इसकी जानकारी सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए दी। पहले चरण में 29 जनवरी को आर्थिक सर्वेक्षण संसद में पेश किया जाएगा। इसके बाद 1 फरवरी (रविवार) को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण आम बजट पेश करेंगी। पूरे सत्र में कुल 30 बैठकें प्रस्तावित हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि केंद्र सरकार सामाजिक न्याय के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि आज देश के लगभग 95 करोड़ नागरिकों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिल रहा है। उनके अनुसार, पिछले 10 वर्षों में करीब 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार के तीसरे कार्यकाल में गरीबों को और सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही भ्रष्टाचार और घोटालों पर लगाम लगाकर सार्वजनिक धन के सही उपयोग को सुनिश्चित किया गया है।

खेत से मां को लाने निकले थे पिता-पुत्र, तेज रफ्तार बल्कर ने कुचलकर मार डाला

भड़के ग्रामीणों ने लगाया जाम

सतना(नप्र)। जिले में एक दर्दनाक हादसे में पिता और पुत्र की मौके पर ही मौत हो गयी है। दोनों बाइक से खेत अपनी पत्नी को वापस लेने जा रहे थे। तभी तेज रफ्तार बल्कर ने उन्हें कुचल दिया, जिससे दोनों की मौके पर ही मौत हो गयी। फिलहाल पुलिस मर्ग कायम कर मामले पर आगे की जांच में जुटी हुई है।

ग्रामीणों ने किया चक्काजाम- दरअसल सतना जिले के कोलगवां थाना क्षेत्र में मंगलवार शाम एक हंसता-खेलता परिवार उजड़ गया। बाइक से जा रहे पिता और उसके 7 साल के मासूम बेटे को एक तेज रफ्तार ट्रक (बल्कर) ने बेरहमी से कुचल दिया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद गुस्साए ग्रामीणों ने सड़क पर चक्काजाम कर दिया, जिन्हें पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद शांत कराया है।

मटेहना के पास हुआ हादसा- मृतक की पहचान शंखधर केवट (35) और उनके बेटे सिद्धू उर्फ सिद्धार्थ (7) के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि शंखधर अपने बेटे को बाइक पर बैठाकर खेत में बनी अहरी (झोपड़ी) से अपनी पत्नी को लेने जा रहे थे। शाम करीब 7 बजे जैसे ही वे मटेहना और कृपालपुर के बीच पहुंचे, सामने से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रक ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। पिता-पुत्र सड़क पर गिरे और ट्रक की चपेट में आने से उनकी सांसें वहीं थम गईं।

गुस्साए ग्रामीणों ने शव उठाने से रोका- हादसे की खबर फैलते ही देखते ही देखते मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई। दो मौतों से आक्रोशित लोगों ने मटेहना रोड पर जाम लगा दिया और प्रदर्शन शुरू कर दिया। ग्रामीणों का गुस्सा इतना ज्यादा था कि उन्होंने पुलिस को शव उठाने से भी रोक दिया। करीब एक घंटे तक सड़क पर हंगामा चलता रहा।

बल्कर ड्राइवर हिरासत में- सूचना मिलते ही कोलगवां थाना प्रभारी सुदीप सोनी भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने ग्रामीणों को समझाइश दी और उचित कार्रवाई का भरोसा दिलाया, तब जाकर लोग शांत हुए और जाम खोला गया।

देशभर में थम नहीं रहा यूजीसी के नए नियमों का विरोध

● यूपी में सवर्ण युवकों ने मुंडन कराया,बिहार में फांसी मांगी ● सुप्रीम कोर्ट सुनवाई को तैयार, कहा- हम इसे लिस्ट करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में जनरल कैटेगरी के स्टूडेंट्स और सवर्ण जाति के लोगों का यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन के नए नियमों को लेकर विरोध जारी है। बुधवार को सुप्रीम कोर्ट ने नए नियमों के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई की मांग स्वीकार की। सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की बेंच ने वकीलों की दलीलों पर ध्यान दिया। सीजेआई ने कहा- हमें पता है कि क्या हो रहा है। सुनिश्चित करें कि खामियों को दूर किया जाए। हम इसे लिस्ट करेंगे। इधर, यूपी-बिहार में आज भी जमकर हंगामा हुआ। स्टूडेंट्स और सवर्ण जातियों के लोग सड़कों पर उतरे। यूपी के पीलीभीत में सवर्ण समाज के युवकों ने मुंडन कराया। बिहार में पीएम मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के पोस्टर पर कालिख पोती गई। यूजी ने 13 जनवरी को अपने नए नियमों को नोटिफाई किया था। इसका नाम है- प्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन रेगुलेशन्स, 2026। इसके तहत कॉलेजों और यूनिवर्सिटी में जाति आधारित भेदभाव को रोकने के लिए विशेष समितियां, हेल्पलाइन और मॉनिटरिंग टीमें

बनाने के निर्देश दिए हैं। ये टीमें खासतौर पर एससी, एसटी और ओबीसी छात्रों की शिकायतों को देखेंगी। सरकार का कहना है कि ये बदलाव उच्च शिक्षा संस्थानों में निष्पक्षता और जवाबदेही लाने के लिए किए गए हैं। हालांकि नियमों को जनरल कैटेगरी के खिलाफ बताकर विरोध हो रहा है। आलोचकों का कहना है कि सवर्ण छात्र 'स्वाभाविक अपराधी' बना दिए गए हैं। जनरल कैटेगरी के स्टूडेंट्स का कहना है कि नए नियम कॉलेज या यूनिवर्सिटी कैंपसों में उनके खिलाफ भेदभाव को बढ़ावा दे सकते हैं। इससे कॉलेजों में अराजकता पैदा होगी। सभी यूनिवर्सिटी, कॉलेजों और उच्च शिक्षण संस्थानों में इक्विटी कमेटी के गठन को अनिवार्य करने की सिफारिश संसद की शिक्षा, महिला, बाल, युवा और खेल संबंधी स्थायी समिति ने की थी। इस समिति के अध्यक्ष कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह हैं। समिति में कुल 30 सदस्य हैं, जिनमें लोकसभा के 21 और राज्यसभा के 9 सांसद शामिल हैं। इनमें सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसद शामिल हैं।

भारत और रूस की जोड़ी दुनिया को दिखाएगी ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और रूस की जोड़ी जल्द ही समंदर से पूरी दुनिया को ताकत दिखाने जा रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक रूस और भारत आगामी फरवरी में हिंद महासागर में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास करेंगे। इस ज्वॉइंट नेवल एक्सरसाइज का आयोजन बंगाल की खाड़ी में किया जाएगा। रूस की सरकारी समाचार एजेंसी ने बुधवार को रूसी मैरीटाइम कॉलेज की प्रेस सेवा के हवाले से यह जानकारी दी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि रूसी

नौसेना के प्रशांत बेड़े का एक फ्रिगेट मिलान-2026 अभ्यास में भाग लेने के लिए ओमान के मस्कट बंदरगाह से रवाना होगा। इसके बाद यह जहाज 18 से 25 फरवरी तक भारतीय बंदरगाह विशाखा पत्तनम का अनौपचारिक दौरा करेगा। बता दें कि भारत और रूस हर साल अभ्यास इंद्र के नाम से एक संयुक्त नौसैनिक अभ्यास करते हैं। इससे पहले मॉस्को में भारत के राजदूत विनय कुमार ने बीते सोमवार को कहा है कि भारत और रूस 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार में 100 अरब अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य हासिल करने के लिए आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे हैं और व्यापार के दायरे को बढ़ाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। राजदूत कुमार ने भारत के 77वें गणतंत्र दिवस पर 'पीटीआई' से बातचीत में कहा, पिछला वर्ष विशेष रूप से सक्रिय रहा। पुतिन की यात्रा अत्यंत सफल रही।

● श्री मां सिद्धेश्वरी माता मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में

चौथे दिन श्री राम जन्म एवं श्री कृष्ण अवतार की कथा प्रसंग सुनाए

भोपाल। श्री मां सिद्धेश्वरी माता मंदिर समिति भोपाल एवं आदि गौड़ बावीसा पारोत्रा समाज भोपाल के तत्वावधान में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में आज चौथे दिन श्री राम जन्म एवं श्री कृष्ण अवतार की कथा प्रसंग सुनाए गए। व्यास पीठ से आचार्य श्री अशोक कुमार शास्त्री के मुखारविंद से उद्धृत अमृत वचनों से उपस्थित श्रोताओं ने धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर गुफा मंदिर के प्रशासनिक अधिकारी श्री विमल दास जी महाराज, आचार्य श्री लेखराज शर्मा, भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री गिरीश शर्मा , कांग्रेस के प्रदेश महासचिव श्री अमित शर्मा, हिन्दू उत्सव समिति के अध्यक्ष चन्द्र शेखर तिवारी, ब्राह्मण समाज के आशीष तिवारी, सहित बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी जन उपस्थित थे। गुरुवार को

पांचवे दिन गोवर्धन लीला होगी। इस अवसर पर श्रद्धालुओं द्वारा अन्नकूट का आयोजन किया गया है।

आयोजक मंच ने सभी समाज बंधुओं एवं मातृ शक्ति से निवेदन किया है कि जो भी धर्मावलंबी छप्पन भोग लाना चाहते हैं। भगवान का भोग लगा कर धर्म लाभ लें।

सभी समाज बंधुओं एवं मात्र शक्ति से सादर अनुरोध है कि श्री भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में पधारकर धर्म लाभ लें।

निवेदक- श्री मां सिद्धेश्वरी माता मंदिर समिति एवं आदि गौड़ बावीसा पारोत्रा ब्राह्मण समाज भोपाल।

एसिड अटैक की घटनाओं पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

● राज्य सरकारों से मांग लिया पीड़िताओं का ब्यौरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में एसिड अटैक की घटनाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों को नोटिस जारी करते हुए इस तरह की घटनाओं का वर्ष वार ब्योरा मांगा है। तेजाब हमले की घटनाओं पर न्यायालय ने राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों से उन मामलों की संख्या बताने को कहा जिनमें आरोपपत्र दायर किए जा चुके हैं। इसके अलावा यह जानकारी भी मांगी है कि कितने मामलों में फैसला हो चुका है और कितने लंबित हैं। सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों से कहा है कि इसका पूरा विवरण दिया जाए कि एसिड अटैक से जुडडी कितनी अपील दायर की गई हैं। पीड़ियों के ब्यौरे में शैक्षणिक योग्यता, वैवाहिक स्थिति, उपचार, पुनर्वास और मुआवजे की भी पूरी जानकारी मांगी गई है। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ऐसे मामलों की भी लिस्ट दी जाए जिसमें किसी पीड़िता को जबरन एसिड पिला दिया गया हो। एक बार सारे आंकड़े सामने आ जाएंगे तो आगे कदम उठाने में आसानी होगी और पीड़ितों को न्याय मिलेगा।

मणिपुर में जानवरों की आवाज निकालकर डरा रहा कुकी समुदाय

● हिंसा के ढाई साल बाद भी दहशत,उग्रवादियों ने घरों और फार्महाउस में आग लगाई

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर की राजधानी इम्फाल वेस्ट से 25 किलोमीटर दूर आखिरी गांव कौत्रुक चिंग लेइकाई में लोग हिंसा के ढाई साल बाद भी दहशत में हैं। यहां के लोगों का आरोप की कुकी समुदाय के लोग उन्हें उकसाने के लिए रात में जानवरों की आवाज निकलते हैं। उनका कहना है कि कुकी चाहते हैं कि गांव वाले इसका जवाब दें जिससे कुकी उन पर हमला कर सकें। वहीं, मणिपुर के कुकी बहुल जिले कांगपोकपी में सोमवार को उग्रवादियों ने कई घरों और फार्महाउसों में आग लगा दी। के सोंग्लुंग गांव में हुई घटना

की जिम्मेदारी जेलियांग्रोंग यूनाइटेड फ्रंट ने ली। फ्रंट ने आरोप लगाया है कि इन घरों, फार्महाउसों में अफीम की अवैध खेती की जा रही थी। इस घटना के बाद कुकी नागरिक समाज संगठन, कमेटी ऑन ट्राइबल यूनिटी ने चेतावनी दी है कि आरोपी गिरफ्तार नहीं हुए तो 27 जनवरी की रात से 28 जनवरी की रात तक इम्फाल-दीमापुर नेशनल हाईवे बंद कर देंगे। 8 सितंबर 2023 को गांव की निंगथॉजाम जिना (17) घायल हो गई थी। वे कहती हैं, तब कक्षा 9 में थी। एक गोली दाहिने पैर को छूते हुए निकल गई।

भारत ग्लोबल पॉलिटिक्स में टॉप पर पहुंचा

● यूरोपियन कमीशन प्रेसीडेंट बोलीं-पीएम,सीजेआई शामिल हुए

राष्ट्रपति भवन में यूरोपियन डेलीगेट्स के लिए डिनर रखा गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूरोपियन काउंसिल के प्रेसीडेंट एंटोनियो कोस्टा और यूरोपियन कमीशन की प्रेसीडेंट उर्सुला वॉन डेर लेयेन के सम्मान में मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में डिनर रखा गया। इस दौरान यूरोपियन कमीशन की प्रेसीडेंट उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने कहा कि भारत ग्लोबल राजनीति में टॉप पर पहुंच गया है। यह एक ऐसा डेवलपमेंट है जिसका यूरोप स्वागत करता है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि वैश्विक अनिश्चितता के इस दौर में, भारत-यूरोप की सोच और नजरिया एक जैसा है। हमारा मानना है कि वैश्विक चुनौतियों का सामना सिर्फ सामूहिक प्रयासों से ही किया जा सकता है। इस

खास डिनर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत, एनएसए अजित डोभाल समेत कई हस्तियां शामिल हुईं।

● डिनर मेन्यू में हिमालयी डिशेस पर फोकस- राष्ट्रपति भवन में हुए डिनर में मेन फोकस पहाड़ी डिशेस पर रहा। मेन्यू में याक चीज से लेकर गुच्छी जैसी चीजें सर्व की गईं। डिनर की शुरुआत जाखिया आलू के साथ हरी टमाटर की चटनी और मेआ लून और सफेद चॉकलेट के साथ झांगोरा की खीर से हुई। इसके बाद सूप में सुंदरकला थिचोनी सर्व की गई। मेन कोर्स में खसखस, भुने हुए टमाटर की चटनी और हिमाचली स्वर्णु चावल के साथ सोलन मशरूम सर्व किए गए।

15 वर्षों में दोगुना हो जाएगा प्लास्टिक से स्वास्थ्य पर पड़ने वाला दुष्प्रभाव

गंभीर परिणाम भुगतने को रहें तैयार,सबसे अधिक नुकसान प्लास्टिक उत्पादन और खुले में जलाने से

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्लास्टिक के उपयोग को नियंत्रित करने के लिए यदि तत्काल आवश्यक कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

द लांसेट की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, विश्व की प्लास्टिक प्रणाली से होने वाले उत्सर्जन, जिनमें ग्रीनहाउस गैसें, वायु प्रदूषक कण और उत्पादन से निकलने वाले विषैले रसायन शामिल हैं, के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव 2016 के स्तर की तुलना में 2040 तक दोगुने से भी अधिक हो सकते हैं।

लंदन स्कूल की मेगन डीनी ने कहा कि हमने पाया कि प्लास्टिक के जीवन चक्र के दौरान होने वाले उत्सर्जन से वैश्विक तापवृद्धि, वायु प्रदूषण, विषाक्तता से संबंधित कैंसर और गैर-संक्रामक रोगों के कारण मानव स्वास्थ्य पर बोझ बढ़ता है। इसमें सबसे अधिक नुकसान प्राथमिक प्लास्टिक उत्पादन और खुले में जलाने से होता है।

आठ करोड़ से ज्यादा स्वस्थ्य जीवन वर्षों का नुकसान

अध्ययनकर्ताओं के अनुसार अगर प्लास्टिक प्रणाली बिना किसी नीति, अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचे या उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव के जारी रहती है, तो वार्षिक स्वास्थ्य दुष्प्रभावों में दोगुने से भी अधिक वृद्धि हो सकती है। 2016 में पूरी दुनिया को 21 लाख स्वस्थ जीवन वर्षों का नुकसान उठाना पड़ा था। 2040 में यह नुकसान बढ़कर 45 लाख स्वस्थ जीवन वर्ष हो सकते हैं।

कुल मिलाकर 2016 से 2040 के बीच प्लास्टिक प्रणाली वैश्विक आबादी से लगभग 8.3 करोड़ स्वस्थ जीवन-वर्ष छीन सकती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि केवल प्लास्टिक कचरे के रीसाइकल में सुधार से बहुत कम प्रभाव पड़ेगा। लेकिन यदि इसके साथ वैकल्पिक सामग्री अपनाई जाए और पुनः उपयोग की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए, तो स्वास्थ्य दुष्प्रभावों में कमी देखी जा सकती है। प्लास्टिक उत्सर्जन और स्वास्थ्य पर इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए, नीति निर्माताओं को अनावश्यक उपयोगों के लिए नए प्लास्टिक के उत्पादन में भारी कटौती करनी होगी।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से खेल एवं युवा कल्याण, सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग ने लोकभवन में सौजन्य भेंट की।

बेहतर शिक्षा से सशक्त हो रहा प्रदेश के बच्चों का भविष्य : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

● 369 नए सांदीपनि विद्यालय प्रारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बच्चे राष्ट्र की पूंजी हैं। इनका भविष्य संवारना हम सबकी जिम्मेदारी है। बेहतर शिक्षा के लिए मजबूत अधोसंरचनाओं और कुशल मानव प्रबंधन पर हम प्रदेश के बच्चों का भविष्य बेहतर बना रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारा मूल संकल्प है कि प्रदेश के स्कूल जाने योग्य हर विद्यार्थी तक गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा की पहुंच सुनिश्चित हो। इसी संकल्प की पूर्ति के लिए हमने प्रदेश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति से प्रेरणा लेकर अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण सांदीपनि विद्यालयों की शुरुआत की है। अब तक प्रदेश में 369 नए सांदीपनि विद्यालय प्रारंभ हो चुके हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सबको अनिवार्य रूप से शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू है। इस अधिनियम के अंतर्गत हमने अब तक प्रदेश के 8.50 लाख से अधिक विद्यार्थियों की समुचित शिक्षा के लिए सभी स्थायी प्रबंध और पुख्ता शिक्षण व्यस्थाएं सुनिश्चित कर दिए हैं। बच्चों का भविष्य बेहतर बनाने के लिए हम कोई कमी नहीं करेंगे।

भारत और यूरोपियन यूनियन ट्रेड डील से राज्यों को भी मिलेगा लाभ : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत और यूरोपियन यूनियन के बीच हुए द्विपक्षीय व्यापार समझौते (न्यू ट्रेड डील) पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि भारत में आयात कम करने और निर्यात बढ़ाने के लिए यूरोपियन यूनियन के साथ यह ट्रेड डील अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। इस डील से देशभर में वस्तुएं सस्ती होंगी और राज्यों को भी इसका भरपूर लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह ट्रेड डील हमारी अर्थव्यवस्था को नई मजबूती देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत आर्थिक रूप से समृद्ध और सशक्त हो रहा है। दुनिया के कई देशों में आर्थिक और कूटनीतिक स्तर पर उथल-पुथल का वातावरण बना हुआ है। ऐसे समय में भी प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रयासों से डेढ़ अरब की आबादी के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। यह ट्रेड डील इसी दिशा में एक बेहद कारगर कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मीडिया को दिए संदेश में यह विचार व्यक्त किए।

हज-2026 के लिए प्रतीक्षा सूची से 41 यात्रियों का चयन

31 जनवरी तक जमा करनी होगी अग्रिम राशि, राज्य हज कमेटी कार्यालय में भी जमा कर सकेंगे दस्तावेज

भोपाल (नप्र)। हज कमेटी ऑफ इंडिया ने हज-2026 के लिए प्रतीक्षा सूची की पांचवीं सूची जारी कर दी है। इस सूची में मध्यप्रदेश की प्रतीक्षासूची क्रमांक 2968 से 3008 तक के कुल 41 हज आवेदकों को प्रोविजनल रूप से चयनित किया गया है।

चयनित हज यात्रियों को अग्रिम हज राशि 2 लाख 77 हजार 300 रुपए जमा करनी होगी। इसमें प्रथम किस्त 1 लाख 52 हजार 300 रुपए और द्वितीय किस्त 1 लाख 25 हजार रुपए शामिल हैं। राशि जमा करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2026 तय की गई है।

हज राशि हज कमेटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट hajcommittee.gov.in या हज सुविधा ऐप के माध्यम से क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और नेट बैंकिंग से जमा की जा सकती है। इसके अलावा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में निर्धारित पे-इन-स्लिप के जरिए भी राशि जमा करने की सुविधा है। राशि जमा करते समय प्रत्येक हज यात्री को बैंक रेफरेंस नंबर दर्ज करना अनिवार्य होगा।

हज राशि हज कमेटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट या हज सुविधा ऐप के माध्यम से क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और नेट बैंकिंग से जमा की जा सकती है।

हज राशि हज कमेटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट या हज सुविधा ऐप के माध्यम से क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और नेट बैंकिंग से जमा की जा सकती है।

राशि जमा करने के बाद प्रोविजनल रूप से चयनित हज यात्रियों को हज आवेदन फॉर्म की हस्ताक्षरित प्रति, आवश्यक दस्तावेज और मेडिकल स्क्रीनिंग व फिटनेस सर्टिफिकेट अपलोड करना होगा। ये दस्तावेज हज कमेटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट पर ऑनलाइन अपलोड किए जा सकते हैं या मध्यप्रदेश राज्य हज कमेटी कार्यालय हज हाउस ग्राम सिंगारचोली गुलमोहर गार्डन के पीछे एयरपोर्ट रोड भोपाल में 2 फरवरी 2026 तक जमा किए जा सकते हैं।

हज कमेटी ने स्पष्ट किया है कि निर्धारित समय-सीमा में अग्रिम राशि और दस्तावेज जमा नहीं करने पर संबंधित हज यात्री की सीट निरस्त कर दी जाएगी। चयनित आवेदकों से समय-सीमा का सख्ती से पालन करने की अपील की गई है।

रबी सीजन में निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने चार्ज 400 केवी टावरों में की गई स्ट्रेंथनिंग

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युमन सिंह तोमर ने बताया कि मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने 400 केवी कटनी-दमोह एक्स्ट्रा हाई टेंशन ट्रांसमिशन लाइन के टावरों के सुदृढ़ीकरण का प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। इनमें से अनेक टावरों का काम चालू ट्रांसमिशन लाइन में ही किया गया ताकि प्रदेश में रबी सीजन के दौरान किसानों और उपभोक्ताओं को निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित होती रहे।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने बताया कि बिरसिंहपुर थर्मल पावर प्लांट से विद्युत की निर्बाध निकासी तथा रबी सीजन में बढ़ी हुई अधिकतम विद्युत मांग के बीच प्रदेश की आपूर्ति व्यवस्था को स्थिर बनाये रखने की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद 400 के वी ट्रांसमिशन लाइनों के टावरों की स्ट्रेंथनिंग का कार्य बिना शटडाउन लिए, चालू लाइन पर ही किया गया। इससे उत्पादन एवं आपूर्ति पर किसी प्रकार का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा।

इसलिए जरुरत पड़ी स्ट्रेंथनिंग एवं रेट्रोफिटिंग की

एम पी ट्रांसको के ट्रांसमिशन लाइन मेंटेनेंस विभाग के मुख्य अभियंता श्री दीपक कुमार अग्रवाल ने बताया कि समय के साथ कमजोर हुए कुछ टावरों को मजबूती प्रदान करने तथा बदलती मौसमीय परिस्थितियों और तेज हवाओं को ध्यान में रखते हुए एमपी ट्रांसको प्रबंधन द्वारा टावरों का टेक्निकल आडिट करवाने के बाद स्ट्रेंथनिंग एवं रेट्रोफिटिंग का निर्णय लिया गया था।

मेहमान बनकर आया, चोरी कर ले गया जेवरात

घर की अलमारी से 10 लाख के सोने-चांदी के आभूषण और नकदी चोरी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के निशातपुरा थाना क्षेत्र में हुई चोरी की एक बड़ी वारदात का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। इस मामले में चौंकाने वाला तथ्य यह सामने आया कि चोरी किसी बाहरी व्यक्ति ने नहीं, बल्कि पीड़िता के ही रिश्तेदार ने की थी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब 10 लाख रुपए मूल्य के सोने-चांदी के जेवरात और 20 हजार रुपए नकद बरामद किए हैं।

घर के अंदर से ही उड़ा कीमती सामान

राजनगर फेस-1, करोंद निवासी संगीता मालवीय ने पुलिस को बताया कि 22 जनवरी को अलमारी के लॉकअप में रखे सोने-चांदी के जेवरात और नकदी सुरक्षित थे। 25 जनवरी को जब उन्होंने उधारी के पैसे देने के लिए अलमारी खोली, तो 20 हजार रुपए और जेवरात गायब मिले। काफी खोजबीन के बाद भी जब कोई सुराग नहीं मिला, तो 26 जनवरी को थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई।

जेवरात और नकदी पूरी तरह बरामद

पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर सोने के कान के टॉप्स, छुमकी, अंगूठियां, चेन, मंगलसूत्र, चांदी की करधनी, पायल सहित अन्य आभूषण और 20 हजार रुपए नकद बरामद किए। जब्त संपत्ति की कुल कीमत लगभग 10 लाख रुपए बताई जा रही है।

तकनीकी साक्ष्य से खुली चोरी की परतें

मामला दर्ज होते ही पुलिस ने जांच तेज की। तकनीकी साक्ष्य, सीसीटीवी फुटेज और मुखबिर तंत्र को सक्रिय किया गया। जांच के दौरान पुलिस को यह संकेत मिले कि चोरी करने वाला कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसे घर के अंदर आने-जाने की पूरी जानकारी थी।

जांच में संदेह पीड़िता के दूर के रिश्तेदार पुष्कर बाथरे पर गया, जो कुछ दिन पहले उनके घर मेहमान बनकर आया था। पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर पूछताछ की, जहां उसने चोरी की वारदात को स्वीकार कर लिया। आरोपी ने बताया कि मौका देखकर उसने अलमारी से नकदी और जेवरात चुरा लिए थे।

10 आईएएस करेंगे पीएम ग्रामीण सड़क योजना की मॉनिटरिंग

सार्वजनिक परिवहन की व्यवस्था भी जिम्मेदारी में शामिल, मुख्य सचिव की अध्यक्षता में बनी कमेटी

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसबाय)की सड़कें बनवाने के साथ अब आईएएस अफसर इन सड़कों पर सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था के लिए भी उत्तरदायी होंगे। इन अधिकारियों की जिम्मेदारी होगी कि वे सड़क निर्माण के प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजने के साथ-साथ सड़क निर्माण में अड़चन बनने वाली वन और पर्यावरणीय स्वीकृतियां दिलाने के लिए भी प्रयास करें। ये अधिकारी ग्रामीण सड़क क्षेत्रीय नीति और सड़कों की चौड़ाई के लिए भूमि उपलब्ध कराने के लिए भी काम करेंगे।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के कामों में और कसावट लाने के लिए एमपी के दस आईएएस अफसरों की टीम बनाई गई है। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने राज्य स्तर पर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में मॉनिटरिंग करने का निर्देश दिया है। इसके बाद मध्यप्रदेश में स्टेट लेवल स्टैंडिंग कमेटी (राज्य स्तरीय स्थायी समिति) बनाई गई है। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में बनाई गई इस कमेटी में 13 अधिकारी शामिल किए गए हैं, जिनमें दस आईएएस और तीन तकनीकी अधिकारी हैं।

कमेटी के ये रहेंगे काम

● भारत सरकार को योजना के अंतर्गत भेजे जाने वाले प्रस्तावों का अनुमोदन।

● हर तिमाही योजना के कामों की प्रगति की समीक्षा।
● क्वालिटी कंट्रोल के लिए राज्य स्तर पर सेकेंड लेवल का निरीक्षण।
● कार्यान्वयन एजेंसी की क्षमता संवर्धन और प्रशिक्षण।
● ऑनलाइन परियोजना और लेखा प्रबंधन।
● रखरखाव निधियों का बजटीकरण।
● सड़कों के लिए आवश्यक भूमि और चौड़ाई की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
● वन और पर्यावरणीय स्वीकृति दिलाना।
● पीएमजीएसवाई के अंतर्गत बनी सड़कों पर सार्वजनिक परिवहन की व्यवस्था।
● सड़क सुरक्षा संबंधित मुद्दों का समाधान।
● ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के साथ समन्वय।
● ग्रामीण सड़क क्षेत्रीय नीति को प्रभावित करने वाले मुद्दों की पहचान और निराकरण।

कमेटी में शामिल अधिकारी

मुख्य सचिव - अध्यक्ष
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव वित्त - सदस्य
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग - सदस्य सचिव
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव वन एवं पर्यावरण विभाग - सदस्य
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग - सदस्य
संयुक्त सचिव, भारत सरकार - ग्रामीण विकास मंत्रालय से नामांकित प्रतिनिधि - सदस्य
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव लोक निर्माण विभाग - सदस्य
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव परिवहन विभाग - सदस्य
अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव खनिज साधन विभाग - सदस्य
राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी - सदस्य
मुख्य कार्यपालन अधिकारी, एमपी ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण - सदस्य
मुख्य अभियंता, एमपी ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण - सदस्य

भोपाल में रेसीडेंसियल बिल्डिंग में आग, हड़कंप

भारत माता चौराहा के पास चौथे फ्लोर पर रखा था सामान ; 2 किमी दूर से दिखा धुआं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के भारत माता चौराहा स्थित एक बिल्डिंग के चौथे फ्लोर पर आग लग गई। घटना बुधवार शाम 4.30 बजे की है। तीन फायर स्टेशन से दमकलें मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। आग से हड़कंप मच गया। बिल्डिंग के फ्लेट्स से लोग बाहर निकलकर सड़क पर आ गए। गनीमत रही कि कोई जनहानि नहीं हुई।

चौराहे के पास ही रेसीडेंसिल बिल्डिंग है। तीन मंजिल पर फ्लेट्स हैं। वहीं, चौथे पर स्टोर नुमा रूम बना है। जहां पर घरेलू जैसे- कूलर, फर्नीचर आदि सामान रखा था। इसी रूम में बुधवार की शाम को आग लग गई। लकड़ी का सामान होने की वजह से आग की लपटें काफी ऊपर तक उठ गई। वहीं, धुआं दो किलोमीटर दूर से भी दिखाई दे रहा था। तुरंत फायर स्टेशन पर सूचना दी गई।

आग लगने की वजह पता नहीं चली- आग लगने की जानकारी मिलते ही माता मंदिर, पुल बोगदा और फतेहगढ़ फायर स्टेशन से दमकलें मौके पर पहुंची। इसके बाद चौथे फ्लोर पर लगी आग को काबू में पाया। फायर फाइटर अभिषेक मेवावत, मंजर अली, अजय यादव आदि फायरकर्मियों ने ऊपर तक पाइप ले जाकर आग बुझाई। उन्होंने बताया कि चौथे फ्लोर पर स्टोर रूम था। इसमें लोगों ने अपना सामान रखा हुआ था। इसी में आग लगी थी। आग कैसे लगी, इसका पता नहीं चल सका। 20 मिनट में ही आग पर काबू पा लिया था।

कई किमी दूर से दिखा धुआं- बिल्डिंग की आग का धुआं कई किलोमीटर दूर से भी दिखाई दे रहा था। इसके चलते चौराहे पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ भी इकट्ठा हो गई।

मजबूत परिवार, सशक्त समाज की दिशा में निर्णायक पहल

महिला बाल विकास मंत्री सुश्री भूरिया ने किया भोपाल में 'तेरे मेरे सपने' प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर का शुभारंभ

भोपाल(नप्र)। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) के मार्गदर्शन में विवाह-पूर्व संवाद को संस्थागत स्वरूप देने वाली देश की पहली संरचित पहल 'तेरे मेरे सपने' के अंतर्गत प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर (पीएमसीसी) का शुभारंभ भोपाल में किया। इस अवसर पर उन्होंने शक्ति सदन का भी शुभारंभ किया।

मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने कहा कि जब 'तेरे' और 'मेरे' सपने मिलकर 'हमारे' सपने बनते हैं, तभी एक स्वस्थ, सुरक्षित और सशक्त भारत का निर्माण संभव है। मजबूत समाज की नींव मजबूत परिवार होते हैं और मजबूत परिवार सोच-समझकर बनाए गए रिश्तों से ही संभव हैं। उन्होंने कहा कि आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में विवाह से पहले संवाद, समझ और भावनात्मक तैयारी अत्यंत आवश्यक हो गई है। 'तेरे मेरे सपने' पहल युवाओं को विवाह से पूर्व आपसी अपेक्षाओं, मूल्यों, जिम्मेदारियों और भविष्य की योजनाओं पर खुलकर चर्चा करने का सुरक्षित एवं मार्गदर्शित मंच प्रदान करती है।

मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि संवाद की कमी, अवास्तविक अपेक्षाएँ और भूमिका स्पष्टता के अभाव में कई वैवाहिक रिश्ते तनाव, मानसिक उत्पीड़न और घरेलू हिंसा तक पहुँच जाते हैं। ऐसे में प्री-मैरिटल

कम्युनिकेशन सेंटर न केवल विवादों की रोकथाम में सहायक होंगे, बल्कि सम्मान, सहमति और समानता पर आधारित रिश्तों को भी मजबूत बनाएंगे। उन्होंने बताया कि निर्भया फाउंडेशन द्वारा संचालित यह परियोजना महिलाओं की सुरक्षा, गरिमा और सशक्तिकरण के राष्ट्रीय संकल्प को मजबूती प्रदान करती है। विवाह से पहले स्पष्टता और संवाद घरेलू हिंसा एवं पारिवारिक विवादों की संभावनाओं को प्रभावी रूप से कम कर सकते हैं।

मंत्री सुश्री भूरिया ने राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती विजया राहटकर के प्रति आभार व्यक्त किया, जिनके मार्गदर्शन में इस पायलट प्रोजेक्ट के लिए भोपाल का चयन किया गया।अभियान से जुड़ी डॉ. प्रतिभा राजगोपाल के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि उनके प्रशासनिक प्रशिक्षण अनुभव से इस पहल को व्यावहारिक और सशक्त दिशा मिलेगी। उन्होंने समाज के अध्यक्षों, धर्मगुरुओं, अभिभावकों और युवाओं से आग्रह किया कि वे विवाह को केवल सामाजिक औपचारिकता नहीं, बल्कि समझदारी और साझेदारी का निर्णय बनाएं तथा विवाह से पूर्व संवाद को स्वीकार करें। मंत्री सुश्री भूरिया ने निर्भया फाउंडेशन की पूरी टीम को इस संवेदनशील और दूरदर्शी पहल के लिए बधाई देते हुए कहा कि सरकार ऐसे सभी प्रयासों के साथ मजबूती से खड़ी है, जो समाज को सुरक्षित, सशक्त और संवेदनशील बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि 'तेरे मेरे सपने' पहल के अंतर्गत अब तक देश के 9 राज्यों में 23 प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर प्रारंभ किए जा चुके हैं। इन केंद्रों के माध्यम से युवाओं को संवाद कौशल, मानसिक स्वास्थ्य, वित्तीय योजना, लैंगिक समानता और पारिवारिक जिम्मेदारियों से संबंधित परामर्श प्रदान किया जा रहा है। सुश्री भूरिया ने विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे लोगों को जिन्हें पीएमसीसी का ब्रांड एम्बेसडर बनाया गया है उन्हें प्रमाणपत्र वितरित कर सम्मानित किया।

तेरे मेरे सपने' 'पीएमसीसी' की विशेषताएँ

यह भारत की पहली संरचित पहल है, जो युवाओं को विवाह पूर्व संवाद, भावनात्मक शिक्षा और आपसी समझ प्रदान करती है।

विवाह पूर्व परामर्श सत्र करके अपेक्षाएँ, मतभेद प्रबंधन, वित्तीय योजना, मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक भूमिकाओं पर मार्गदर्शन दिया जाता है।

इंटरैक्टिव गतिविधियाँ के माध्यम से मनोवैज्ञानिक टूल्स और अभ्यासों के जरिए भावनात्मक जुड़ाव और आपसी समझ को बढ़ाया जाता है।

जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से कॉलेजों, विवाह पंजीकरण कार्यालयों और समुदायों के माध्यम से संवाद कौशल को प्रोत्साहित किया जाता है।

आगे की राह

उल्लेखनीय है कि अब तक देश के 9 राज्यों में 23 प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर प्रारंभ किए जा चुके हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग का लक्ष्य है कि भविष्य में देश के प्रत्येक ज़िले में ऐसा केंद्र स्थापित किया जाए। विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ घरेलू हिंसा और वैवाहिक विवादों के मामले अधिक हैं।

संपादकीय

अजित पवार का जाना बड़ी क्षति

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एवं राष्ट्रवादी कांग्रेस के दिग्गज नेता अजित पवार के विमान हादसे में असामयिक निधन न केवल महाराष्ट्र बल्कि भारतीय राजनीति के लिए भी बड़ी क्षति है। अजित पवार बुधवार सुबह अपने गृह नगर बारामती में जिला परिषद चुनाव के संदर्भ में आयोजित सभा को संबोधित करने के लिए एक निजी विमान से रवाना हुए थे कि लैंड करते समय हादसा हुआ और उस विमान में सवार अजित पवार सहित सभी पांचों लोगों की मौत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि विमान के नीचे गिरते ही उसमें आग लग गई और विमान के टुकड़े-टुकड़े हो गए। अजित पवार के शव की पहचान भी उनकी घड़ी व कपड़ों से हो पाई। यह विमान हादसा कैसे हुआ, इस बारे में अभी अनुमान लगाए जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि विजिबिलिटी कम होने के कारण ऐसा हुआ। पायलट ने पहली बार लैंडिंग की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा। और दूसरी लैंडिंग के वक्त यह भयंकर हादसा हो गया। इस घटना के बाद कई विपक्षी नेताओं ने हादसे की जांच की मांग की है। हालांकि केन्द्रीय विमान एवं उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा है कि एएआईबी इसकी जांच कर रही है। इस बीच महाराष्ट्र सरकार ने अपने नेता के निधन पर तीन दिन के राजकीय शोक का ऐलान किया है। महाराष्ट्र सहित देश के अनेक नेताओं ने अजित पवार को हार्दिक श्रद्धांजलि दी है। इस दुर्घटना से पवार परिवार दुख से व्याकुल है। अजित पवार के चाचा और राजनीतिक गुरू शरद पवार भी बारामती पहुंच गए हैं। अजित पवार का अंतिम संस्कार गुरूवार को होगा। अजित पवार का जाना एक ऐसे नेता का जाना है, जिसे अपनी व्यावहारिक राजनीति, प्रशासनिक क्षमता और जमीनी पकड़ के लिए जाना जाता था। अजित पवार की विचारधारा में बहुत ज्यादा आस्था नहीं थी। वो मानते थे कि विकास के लिए सत्ता चाहिए और इसीलिए वो यथा संभव सत्ता के साथ ही रहे, फिर चाहे वो किसी भी पार्टी की क्यों न हो। इसके लिए उन्हें अपने चाचा शरद पवार से बगावत करनी पड़ी तो उन्होंने ऐसा करने में संकोच नहीं किया। अजित पवार के बारे में कहा जाता है कि अगर उन्होंने किसी काम के हां कह दिया तो उन्हें फिर याद दिलाने की जरूरत नहीं पड़ती थी। अपने कार्यकर्ताओं से उनका जीवंत संपर्क था। अजित ने अपने राजनीतिक कॅरियर की शुरूआत बारामती में सहकारिता से की थी। उन्हें शरद पवार का स्वाभाविक उत्तराधिकारी माना जाता था। बाद में महाराष्ट्र की बदली राजनीति के चलते उन्होंने भाजपा से हाथ मिलाने में संकोच नहीं किया। खासकर 2019 से अजित दादा का राजनीतिक कॅरियर बहुत ही नाटकीय रहा। अपने चाचा से खुली बगावत कर उन्होंने देवेन्द्र फडणवीस को सीएम बनाने के साथ भाजपा से अप्रत्याशित गठबंधन कर खुद उपमुख्यमंत्री बन गए। लेकिन उन्होंने तीन दिन बाद इस्तीफा दे दिया और बीजेपी के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस ले लिया। इससे फडणवीस को इस्तीफा देना पड़ा। इस फैसले से अटकलों का दौर शुरू हो गया और एनसीपी के भीतर वफादारी और महत्वाकांक्षा पर बहस तेज हो गई। उसके बाद शरद पवार और कांग्रेस के साथ उद्धव सरकार बनी। उद्धव सरकार में दादा को उपमुख्यमंत्री बनाया गया। लेकिन जुलाई 2023 में उद्धव सरकार का पतन हो गया। दादा ने एक बार फिर अपने चाचा के खिलाफ विद्रोह किया। इससे उनकी पार्टी में विभाजन हो गया और वे बीजेपी-एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना सरकार में शामिल हो गए। 2024 के लोकसभा चुनाव नतीजों ने साबित कर दिया कि अजित की जमीनी पकड़ भारी है। विस चुनाव में भी उन्होंने 41 सीटें जीतीं। अजित पवार के जाने से राष्ट्रवादी कांग्रेस के भविष्य पर भी प्रश्नचिन्ह लग गया है।

लोकतंत्र, अल्पसंख्यक और समानता के अवसर

नजरिया

डॉ. संजीव कुमार

सामाजिक एवं राजनीतिक विशेषज्ञ

भारतीय परिप्रेक्ष्य में अल्पसंख्यक से लोग सामान्य अर्थ मुस्लिम समुदाय ही समझते हैं, और सत्ता ने भी यही साबित करने का प्रयास किया हैं। परन्तु भारतीय राजनीति में धर्म के आधार पर मुस्लिमों के पश्चात् बौद्ध, ईसाई, सिख, पारसी एवं जैन भी अल्पसंख्यक ही हैं। मानव समाज की संरचना ऐसी हुई हैं जिसमें हमेशा बहुसंख्यक ही हावी रहे हैं, फिर चाहे वह राजतंत्र हो अथवा लोकतंत्र। लेकिन लोकतंत्र के तर्ज़ पर जब समाज की बुनियाद रखी गई तो यह प्रयास किया गया की एक ऐसी व्यवस्था निर्मित की जाएगी जिसमें सभी को समान अवसर तथा सम्मान प्राप्त होगा।

बांग्लादेश में आज सरकार स्थिर नहीं है वहां कई तरह के राजनीतिक उथल-पुथल मचे हुए हैं। धार्मिक उथल-पुथल भी उनमें से एक है। पिछले कुछ सप्ताह से लगातार भारतीय मीडिया में बांग्लादेश में हो रहे हिंदुओं की हत्या पर राजनीति गर्म है। भारतीय राजनीति में वर्तमान की जो सत्ता है उनकी सत्ता की रीढ़ है हिंदुत्व, जाहिर है ऐसे में वे अपने देश में हो रहे तमाम हलचलों को दरकिनार कर वहां हो रहे हिंदुओं की हत्या पर जरूर अपनी राजनीतिक रोटियां सेकना चाहेंगे और भला क्यों ना करें सामने पश्चिम बंगाल का चुनाव भी है। लेकिन हमारी भारतीय जनता यह क्यों भूल जा रही है कि वहां हिंदू अल्पसंख्यक है और भारत में मुस्लिम सहित अन्य धर्म। वहां सरकार स्थिर नहीं है परंतु हमारे यहां तो 12 साल से सरकार स्थिर है तो क्या यहां अल्पसंख्यकों पर कम जुल्म हो रहे हैं? अभी ज्यादा वक्त नहीं बीता है इसी 25 दिसंबर को (क्रिसमस दिवस) कुछ हिंदू नवयुवकों ने हिसार और बरेली सहित कई चर्चों में जाकर ईसाइयों को परेशान करने का कार्य किया और उनके चर्च में जाकर हनुमान चालीसा पढ़ने लगे। बिहार के बोधगया में महात्मा बुद्ध के तीर्थस्थली पर भी अनेक हिंदुत्व के संगठनों ने इस वर्ष माहौल बिगड़ने का कार्य किया और वहां कब्जा करने का प्रयास किया जिसे लेकर देश और दुनिया भर के बौद्धिष्टों को लामबंद होना पड़ा तब जाकर के प्रशासन ने इसकी जिम्मेदारी संभाली। आज प्राय देखने को मिल रहा है कि कुछ हिंदुत्व के तथा-कथित ठेकेदार मंदिर में कम चर्च और मदरसों में ज्यादा पूजा पाठ कर रहे हैं। कभी यह चर्च पर भगवा झंडा लगाने लगते हैं तो कभी मस्जिद पर। जुम्मा का नमाज यदि मुसलमान सड़क पर पढ़ने लगता है तो प्रशासन उस पर लाठी चार्ज करने लगती है। परंतु पूरे सावन के महीने में आधे भारत की सड़के आधी बंद कर दी जाती हैं तो इससे किसी क़ो कोई तकलीफ नहीं होती। नेता खुलेआम मुल्ला

कहते हैं, भाषणों में गालियां देते हैं पर उन पर कोई कार्यवाही नहीं होती। क्योंकि सरकार (हिंदुत्व के एजेंडे वाली) को पता है कि उनकी सत्ता उनके बगैर भी बन सकती है, इसलिए इनके लिए कोई नियम कोई संविधान मायने नहीं रखता। सारा खेल लोकतांत्रिक सत्ता का है। हमें यह तो दिखाई देता है कि बांग्लादेश, पाकिस्तान में हिंदुओं को परेशान किया जा रहा है पर हमें यह क्यों नहीं दिखाई देता कि हमारे देश में अल्पसंख्यकों को परेशान किया जा रहा है? इसका एक ही अर्थ है कि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में जो जहां अल्पसंख्यक है उनकी स्थिति नरकीय है।

मुस्लिम बड़ी संख्या में हैं इसलिए उन पर हमला ज्यादा हैं पर जो छोटे अल्पसंख्यक है अब वें भी सुरक्षित नहीं है। कभी उन्हें विदेशी धर्म होने का ताना देकर मारा जा रहा है तो कभी पराया धर्म बोलकर पीटा जा रहा हैं। खुद के लिए तो घर वापसी के नाम पर बड़े-बड़े धार्मिक आयोजन किये जा रहे हैं लेकिन दूसरे धर्म के लोग यदि धार्मिक आयोजन करते हैं तो उन्हें धर्म परिवर्तन के नाम पर परेशान किया जा रहा है।

लोकतंत्र में यह अल्पसंख्यक का जहर सिर्फ धर्म तक सीमित नहीं है परंतु जातियों तक फैली हुई है। जिस गांव, नगर में जो जाति कम संख्या में हैं उनके साथ भी लोकतांत्रिक भेदभाव किया जाता है। स्थानीय प्रशासन जल्दी उन तक ना पहुंचती है ना ही उनके लिए कोई सरकारी सुविधा ही पहुँच पाती है। आज भी गांव में ग्राम प्रधान और पंचायती चुनाव में जो जातियां कम संख्या में है उनके व्यक्ति का चुनाव जीतना बहुत मुश्किल होता है। (सवर्ण जाति क़ो छोड़कर क्योंकि इनके पास सम्पत्ति के साथ - राजनीतिक अनुभव हैं)। हमारे जातीय व्यवस्था में आने वाले कुछ ऐसी जातियां हैं जिनकी संख्या ग्रामीण स्तर पर बहुत कम देखने को मिलती है। नाई, धोबी, कहार, कोल, निषाद ऐसी ही कुछ जातियां हैं जिनका प्रतिनिधित्व लोकतांत्रिक व्यवस्था में बहुत कम देखने को मिलता है। यह कम संख्या में है तो राष्ट्रीय राजनीति से लेकर के ग्रामीण राजनीति तक में इन्हें उपेक्षा (राजनीतिक) की दृष्टि से देखा जाता है। सत्ता के माहिर लोग उन जातियों के आगे पीछे घूमते हैं जिनकी संख्या भारी होती है। वे जानते हैं कि इन वोटों से उनकी सत्ता बदल सकती है, इसलिए ज्यादा संख्या वाली जातियां लोकतांत्रिक व्यवस्था में ज्यादा मायने रखती है। नतीजन इनकी गलियों में सरकारी सुविधा या तो पहुंचती ही नहीं है यह तो बहुत देर से पहुंचती है। इनके लिए रोजगार, आवास, शिक्षा और सामाजिक विकास की बातें यदा-कदा ही देखने को मिलती है। आज भी जब ग्रामीण स्तर पर ग्राम पंचायत का चुनाव होता है तो यदि उस गांव में दलितों की संख्या अपेक्षाकृत कम है तो उन्हें गांव की संभ्रान्त जातियां मिलकर चुनाव लड़ाती है और जीतने के बाद उसे रबर स्टैंप के रूप में प्रयोग करते है।

अब लौटते है उस अल्पसंख्यक समाज पर जिसे गाली देकर ही वर्तमान सरकार सत्ता में बनी हुई है।दिल्ली के एक मेरे अच्छे मित्र जो एक मुस्लिम अल्पसंख्यक है उनसे मैंने पूछा कि वह अपने समाज को इस लोकतंत्र में कहां पाते हैं तो उन्होंने कहा कि हम राजनीतिक रूप से इस देश में कभी भी सत्ता नहीं प्राप्त कर सकते। उनका अभिप्राय प्रधानमंत्री पद से था। क्योंकि हमारे देश में सत्ता की ताकत प्रधानमंत्री के ही हाथों में होती है, राष्ट्रपति का पद तो बस एक औपचारिक भर रह गया है। उनका कहना था कि हो सकता है एक बार दलित इस देश का प्रधानमंत्री बन जाए पर मुस्लिम को कभी भी प्रधानमंत्री बनने नहीं दिया जाएगा क्योंकि उसे हमेशा अपने देशभक्त होने का सबूत पेश करना पड़ता है। इस देश में सिख, जैन, इसाई सभी प्रधानमंत्री बन सकते है जबकि मतदान के प्रतिशत से यह अन्य मुस्लिमों से कही कम है। क्योंकि यहां मुस्लिम पढ़े तो दिक्कत है लड़े तो दिक्कत है। शायद इसी हताशा के कारण कभी-कभी कुछ बच्चे बड़ी गलतियां कर जाते हैं, लेकिन वह भूल जाते हैं कि ऐसी गलतियां दूसरों को माफ है परन्तु उन्हें नहीं।

तो सवाल अब यह उठता है कि देश के 77 वें गणतंत्र दिवस में पहुँच जाने पर हमारे लोकतांत्रिक व्यवस्था में इन सवालों का क्या जवाब है। क्या हम एक ऐसी व्यवस्था धरातल पर नहीं ला सकते जिसमें सभी वर्ग के उपेक्षित जातियों,धार्मिक अल्पसंख्यक़ो के बगैर सरकार बनना मुश्किल हो ताकि कोई लोकतांत्रिक पद पर बैठा हुआ व्यक्ति यह कहने की जुर्रत ना कर सके कि हमें तुम्हारे वोट की जरूरत नहीं। और अगर ऐसा कोई कहता है तों मैं समझता हूं कि हमारा गणतंत्र अभी अधूरा है।

'वाइन पर्यटन' या उपभोग का उत्सव?

अर्थ तंत्र

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्तंभकार हैं।

प्याज, लहसुन और फूलों समेत सब्जियों के लिए ख्यात नासिक अब वाइन उद्योग को बढ़ावा देने में लगा है, लेकिन क्या यह बाजार के अलावा व्यापक समाज के लिए भी मुनासिब होगा? अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देशों ने यही गलती तम्बाकू के साथ की थी जहां आम लोग एक किलो खाद्यान्न पर एक सिगरेट को प्राथमिकता देने लगे थे। क्या वाइन उद्योग भी नासिक इलाके में यही करेंगे?

महाराष्ट्र के नासिक ज़िले की सह्याद्रि पहाड़ियों में फैले 'वाइन यार्ड' आज एक ऐसे पर्यटन मॉडल का प्रतीक बन चुके हैं, जिसे आकर्षक शब्दों में 'वाइन टूरिज़्म' कहा जाता है। चमकदार ब्रांडिंग, दूर-दूर तक फैले अंगूर के बागान, टेस्टिंग रूम, कैफे, संगीत, खुले लॉन और फ़ोटो-स्पॉट - यह पूरा परिदृश्य किसी सामान्य पारिवारिक सैरगाह जैसा प्रतीत होता है, लेकिन इस आकर्षक दृश्य के पीछे एक चिंताजनक सामाजिक-सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय कहानी छिपी है, जिसे पर्यटन के उत्साह में अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है।

पिछले दिनों हमें उस 'सूला वाइन यार्ड्स' का भ्रमण करने का अवसर मिला जिसे 'वाइन पर्यटन' का अग्रदूत माना जाता है। यहाँ आने वाले पर्यटक वाइन बनाने की प्रक्रिया देखने के साथ-साथ उसे चखते हैं, स्वाद लेते हैं, बोतलें खरीदते हैं और तथाकथित 'लाइफ़ स्टाइल अनुभव' का हिस्सा बनते हैं। यही मॉडल अब नासिक और आसपास के क्षेत्रों में अन्य वाइन ब्रांड्स द्वारा भी अपनाया जा रहा है। उनमें 'सोमा वाइन विलेज,' 'यॉर्क वाइनरी,' 'ग्रोवर ज़म्पा वाइन यार्ड्स,' 'शैन्डन इंडिया,' 'चंदन भारत,' 'फ्रेटेली वाइन,' 'वैलोनवाइन यार्ड्स,' 'इंडेजवाइन यार्ड्स' आदि उल्लेखनीय हैं। इन सभी परिसरों में शराब को केवल एक उत्पाद के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिकता, आनंद और सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यूं तो पर्यटन का उद्देश्य किसी स्थान की संस्कृति, प्रकृति, इतिहास और वहाँ के लोगों से जुड़ना होता है, लेकिन 'वाइन पर्यटन' का मौजूदा स्वरूप इससे अलग दिशा में जाता दिखता है। यहाँ स्थानीय ग्रामीण जीवन, किसानों की वास्तविक परिस्थितियाँ और क्षेत्र की पारंपरिक संस्कृति हाशिये पर चली जाती है। केंद्र में रहता है ब्रांड, बाज़ार और प्रदर्शन। यह ऐसा पर्यटन है, जिसमें आनंद उपभोग से तय होता है। भारतीय समाज की सामूहिकता, सादगी और संयम की परंपरा इस मॉडल से सीधे टकराती है।

नासिक को भारत की 'वाइन कैपिटल' कहा जाता है। अनुकूल जलवायु, सह्याद्रि की ढलानें और दशकों से विकसित अंगूर की खेती ने यहाँ वाइन उद्योग को तेज़ी से पनपने का अवसर दिया है। अनुमान है कि भारत में लगभग 70-80 वाइनरी हैं, जिनमें से 60 प्रतिशत से अधिक महाराष्ट्र में हैं और इनका बड़ा हिस्सा नासिक क्षेत्र में केंद्रित है। नासिक, सांगली, सोलापुर (आकलूज) और पुणे जैसे इलाकों को मिलाकर लगभग 45-50 वाइनरी सक्रिय या अर्ध-सक्रिय मानी जाती हैं। सरकारी नीतियाँ, निर्यात की संभावनाएँ और पर्यटन इस विस्तार को लगातार गति दे रहे हैं, लेकिन यह विस्तार केवल आर्थिक अवसर नहीं लाता; इसके साथ सामाजिक और पर्यावरणीय दबाव भी बढ़ते हैं।

भारत विश्व के प्रमुख अंगूर उत्पादक देशों में शामिल है। देश में हर वर्ष लगभग 30-32 लाख टन अंगूर का उत्पादन होता है, जिसमें 55-60 प्रतिशत हिस्सेदारी महाराष्ट्र की है। नासिक अकेले भारत के कुल अंगूर उत्पादन का लगभग एक तिहाई - करीब 9-11 लाख टन - पैदा करता है। यह उत्पादन लगभग 1.4 -1.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फैली खेती से आता है। नासिक के अंगूर तीन प्रमुख तरीकों से उपयोग किए जाते हैं - ताज़ा फल के रूप में घरेलू बाज़ार, यूरोप और मध्य-पूर्व के लिए निर्यात और वाइन उद्योग के लिए कच्चा माल। वाइन में उपयोग होने वाला अंगूर मात्रा में भले ही कुल उत्पादन का 8-12 प्रतिशत हो, लेकिन जल, भूमि और रसायनों की खपत के लिहाज़ से इसका प्रभाव कहीं अधिक है।

अंगूर की खेती में खूब पानी लगता है। ड्रिप सिंचाई के बावजूद एक हेक्टेयर अंगूर के लिए एक मौसम में औसतन 50-60 लाख लीटर पानी की आवश्यकता पड़ती है। एक लीटर वाइन के उत्पादन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 600-650 लीटर पानी का उपयोग होता है। नासिक जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्र में यह मांग सीधे भूजल दोहन को बढ़ाती है। पिछले वर्षों में कई इलाकों का भूजल स्तर 10-20 मीटर से गिरकर 25-40 मीटर या उससे भी नीचे चला गया है। इसका सीधा असर छोटे, सीमांत किसानों तथा ग्रामीण पेयजल पर पड़ता है, जबकि बड़ी वाइन कंपनियां पानी पर पकड़ बनाए रखती हैं। अंगूर उत्पादन केवल कृषि विकास का आँकड़ा भर नहीं रह जाता, बल्कि वह जल-संकट, भूजल दोहन और कृषि नीति की बहस के केंद्र में आ जाता है।

वाइन उद्योग ने भूमि उपयोग के स्वरूप को भी बदला है। मिश्रित खेती और जैव-विविधता वाली ज़मीनें एक-रूपी अंगूर बागानों में बदल रही हैं। अंगूर की व्यावसायिक खेती में कीटनाशकों और फफूंद नाशकों का नियमित प्रयोग होता है, जिससे मिट्टी और भूजल में रासायनिक अवशेषों का खतरा बढ़ता है। किण्वन, सफ़ाई और बोतलबंदी से निकलने वाला अपशिष्ट जल यदि पूरी तरह शुद्ध न किया जाए, तो आसपास के खेतों और जलस्रोतों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है।

भारतीय समाज में लंबे समय तक शराब को सीमित, निजी और कई बार वर्जित व्यवहार के रूप में देखा गया, लेकिन 'वाइन पर्यटन' इस दृष्टि को बदल रहा है। खुले, सुंदर और उत्सवी माहौल में मद्य-सेवन उसे सामान्य और स्वीकार्य बनाता है। शराब को 'सभ्य', 'सुरक्षित' और 'फ़ैमिली-फ्रेंडली' बताकर प्रस्तुत करना उपभोक्तावादी संस्कृति की सुनियोजित रणनीति है, जिसमें बाज़ार यह तय करता है कि आधुनिकता का अर्थ क्या होगा। इस मॉडल का मुख्य लक्ष्य शहरी मध्यम वर्ग है जो अनुभव-आधारित उपभोग, स्टेटस और आधुनिकता की आकांक्षाओं से संचालित होता है। सप्ताहांतों और छुट्टियों में हजारों परिवारों और बच्चों की मौजूदगी इस मॉडल को वैधता देती है और शराब को 'सामान्य पारिवारिक अनुभव' के रूप में स्थापित करती है।

वाइन परिसरों में सबसे चिंताजनक दृश्य बच्चों की निर्बाध मौजूदगी है। छोटे बच्चे अपने माता-पिता और अन्य वयस्कों को वाइन-टेस्टिंग करते, बोतलें खरीदते और शराब को उत्सव से जोड़ते देखते हैं। बचपन में देखे गए अनुभव ही मूल्यबोध की नींव रखते हैं। इस तरह शराब एक प्रकार के सांस्कृतिक प्रशिक्षण का हिस्सा बन जाती है, जिसका प्रभाव आने वाले दशकों में दिखाई देगा। यह केवल नैतिक प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का मुद्दा है।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि राज्य, प्रशासन और समाज इस बदलाव को मौन स्वीकृति दे रहे हैं। राजस्व और पर्यटन के नाम पर शराब-केंद्रित स्थलों को बढ़ावा देना आसान विकल्प बन गया है, लेकिन सार्वजनिक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक संतुलन और बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों पर गंभीर बहस लगभग अनुपस्थित है। यह चुप्पी ही सबसे बड़ा संकट है, क्योंकि सामाजिक मूल्य बिना किसी सार्वजनिक संवाद के बदलते चले जाते हैं।

असल सवाल यह है कि हम किस तरह का समाज गढ़ रहे हैं? क्या हम अपनी अगली पीढ़ी को यह सिखाना चाहते हैं कि आनंद, आधुनिकता और सामाजिक स्वीकृति का रास्ता मद्यपान से होकर गुजरता है? यदि वाइन पर्यटन को रोका नहीं जा सकता, तो यह मायावी पर्यटन भारतीय समाज को धीरे-धीरे उपभोग-प्रधान और संवेदनहीन संस्कृति की ओर धकेल देगा, जिसकी कीमत आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी।

हिमालय और गंगा के सौन्दर्य का स्मरण

दृष्टिकोण

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

कवि कालिदास को भारत की उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत पृथ्वी के मानदण्ड जैसा दिखता है जो पूर्व और पश्चिम दिशाओं के समुद्रों तक अपनी बाहें फैलाये हुए है। उन्हें रत्नों की खान हिमालय के बहुरंगी खनिजों वाले शिखरों पर मेघों की घिरती छाया अचानक हो आयी साँवरी संध्या का आभास दे रही है। हिमालय की चोटियों पर विचरण करने वाले मेघों के बीच से झाँकता सूर्य का प्रकाश कालिदास के मन को अनुपम सौन्दर्य से भर रहा है।

यह करीब दो हजार वर्षों पहले की झांकी है जिसमें कालिदास को हिमालय की गुफाओं के द्वारों से आती वायु कोई ऊँची तान भरती-सी सुनायी दे रही है।

हिमाद्रि के शिखरों के बीच देवदारु वृक्षों से बहते दूध की सुगंध उनके करीब आ रही है। कालिदास हिमालय की ऊँचाई पर सरोवरों में उगने वाले कमल पुष्पों को सूर्य किरणों से विकसित होते देख रहे हैं। हिमालय से निकली गंगा के निर्झरों से जलकणों को साथ लेकर बह रही वायु कवि कालिदास की देह का स्पर्श करके उन्हें रोमांचित कर रही है।

कवि कालिदास हिमालय को पर्वतों का अधिपति कह रहे हैं। उन्हें हिमालय से प्रवाहित गंगा इन्द्र नील मणियों से जड़ी गयी मोती की छड़ी जैसी लग रही है। कहीं वह नील और श्वेत कमलों की माला जैसी भी प्रतीत हो रही है। कहीं वह हंसों की पंक्ति के समान शोभित दीख रही है। कहीं वह नील-नीरव आकाश में छाये शरद ऋतु के सफेद बादलों जैसी भी भास रही है और कभी जटा-जूट से गुंथे हुए मेघों के समान लग रही है। कभी ऐसी भी लग रही है जैसे चितकबरी चांदनी हो।

गंगा अवतरण पर कवि पद्माकर द्वारा कल्पित यह अनूठा पद्य भी याद आ रहा है...

कूरम पे कोल, कोलहू पे शेष कुण्डली है
कुण्डली पे फबी फैल सुफन हजार की।
कहै पद्माकर त्यों फन पे फबी है भूमि
भूमि पे फबी है थिति रजत पहार की।
रजत पहार पे शम्भु सुर-नायक हैं
शम्भु पे है जोति जटाजूट सों अपार की।
शम्भु जटाजूट पे चन्द्र की छुटी है छटा
चन्द्र की छटान पे छटा है गंगधार की।

अर्थात् कछुए की पीठ पर शेषनाग कुण्डली मारे बैठा है और कुण्डली से ऊपर उठकर उसके हजार फन फैले हैं। कवि पद्माकर कहते हैं कि इन फनों पर धरती शोभित हो रही है और इस धरती पर रजत प्रहार (हिमालय) स्थित है। इस रजत प्रहार पर देवों के नायक शिव का निवास है और उनके जटाजूट पर अपार ज्योति छायी है। शिव के गहन जटाजूट पर चन्द्रमा की छटा और उस चन्द्रमा की छटा पर गंगा की धारा जगमगा रही है।

कवि कालिदास की कविता का स्मरण महाकाश में प्रकृति और चैतन्य के सह-वास से जन्म लेती सृष्टि की प्रतीति जैसा है। उनकी कविता मन के आकाश पर जल से भरे 'मेघदूत' की तरह छा कर तन की धरती पर बरसने लगती है। वे मानस-भूमि पर वाक् और अर्थ से संपृक्त कविता की गंगा उतारते हैं जो देह की नौका को ज्ञान और सौन्दर्य की पतवारों से अपनी लहरों पर नीके-नीके चलाती है।

कालिदास निरुपम-निराकार को सगुण से उपमित करके उसके करीब ले आते हैं और वह रस-निष्पत्तियों-सा रूह के अहसास में समाता ही चला जाता है। गंगा के बहते जल पर किसी के पुण्य-पाप की कोई लिखत ठहरती ही नहीं। जैसे आकाश में किसी के शब्द और उनमें बसी आर्त्त पुकारें खो जाती हैं। हवाओं पर उनके नाम नहीं लिखे जा सकते। अगणनीय काल की जटाओं में और गणनीय समय में बसे देश के वनों- मैदानों में अपना मार्ग खोजकर यह गंगा अपने गंगा सागर में समाती चली जाती है। जो जिस किनारे पर डुबकी लेता है, वहीं रेत प्रर अपने पाँवों को सँभाले खड़ा रह जाता है। गंगा बहती जा रही है। वह किसी के पाप ढोकर नहीं ले जा रही। वह तो उन्हें तटों पर छोड़कर बह रही है। अपनी एक कविता में कहता हूं-

पर्वत के शीर्ष पर चन्द्ररेखा-सा अंकित
गिरि मालाओं पर अक्षत-सा छिटका
काल की जटाओं में ओझल
भाल पर खिंची रेखाओं में चमकता
नयनों में झिलमिलाता
झर रहा है रोम-रोम से पानी
अथाह सागर में
हमारी नौका उठाये
न जाने कबसे बह रहा है पानी।

एक प्रश्न, हमारे देश के छह ऋतुकालों में अपना रूप-सौन्दर्य प्रकट करती, सुजल-सुफल से परिपूर्ण सुंदर जगहें अशान्ति से क्यों भरी हुई हैं? जिन जगहों पर हमारे ज्ञान-साधन तीर्थ स्थापित हैं और जहां सदियों से ज्ञानीजनों का चित्त एकाग्र होता रहा है, वहीं अब ध्यान भंग का बोलबाला क्यों बढ़ता जा रहा है?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

देश के लिए आप क्या कर रहे हैं

व्यंग्य

केदार शर्मा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ज्यों-ज्यों गणतंत्र दिवस नज़दीक आता है, त्यों-त्यों उसका हृदय छोटा होता जाता है। उसकी पत्नी समझाती है–'यह तो खुशी का दिन है। आज हम बिना किसी संघर्ष के आज़ादी भोग रहे हैं।'

वह उसे कैसे समझाए कि यही तो दुःख है– कि बदले में वह देश के लिए कुछ भी नहीं कर पा रहा है। यह स्थिति उसे मंजूर नहीं। उसने तय किया कि पता लगाएगा कि देश के लिए कौन क्या कर रहा है। उनसे प्रेरणा लेकर वह भी वही करेगा।

माइक से एक परिचित नेताजी के भाषण की आवाज़ आई तो वह उधर चल पड़ा। नेताजी कह रहे थे– 'अनगिनत लोगों ने देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया, असहनीय कष्ट सहे। तब जाकर यह आज़ादी हमें मिली है।' कार्यक्रम समाप्त होते ही उसने पूछ लिया– 'सर, हम मानते हैं कि स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के लिए बहुत कुछ किया। लेकिन हम जानना चाहते हैं कि आप स्वयं देश के लिए क्या कर रहे हैं?' नेताजी मुस्कराए–'मैं जीवन भर हर कार्यक्रम में बाक़ायदा उन देशभक्तों को याद कर-करके, उनके उदाहरण दे-देकर, लोगों के दिलों में प्रेरणा भरता आया हूँ।'

पास ही के मंदिर से एक परिचित कथावाचक की आवाज़ गूँज रही थी– 'राम और कृष्ण जैसे अवतारों ने असुरों का संहार कर धरती पर धर्म की स्थापना की।' कथा के बाद एकांत में उसने पूछा–

'आज देश और समाज में आधुनिक असुरों की गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। धर्म-स्थापना के लिए आप स्वयं क्या कर रहे हैं?' कथावाचक ने घूरकर देखा– 'बहरा है क्या, बच्चे? हम डी.जे. सिस्टम के माध्यम से दूर-दूर तक भगवान की लीलाएँ पहुँचा रहे हैं। भगवान ने जो किया, वही तो सुना रहे हैं।'

कॉलेज में एक परिचित इतिहास-प्रोफेसर, इतिहास बन चुके योद्धाओं की वीरता का बखान कर कक्षा से निकले ही थे कि उसने पूछ लिया– 'सर, इतिहास में देश के लिए आपकी क्या भूमिका रहेगी?' वे गंभीर होकर बोले– 'मैं विद्यार्थियों को इतिहास पढ़ा रहा हूँ, ताकि वे भी इसे अगली पीढ़ी तक पहुँचा सकें।'

टी.वी. खोला तो हर चैनल पर शहीदों की गाथाएँ, देशभक्ति से ओतप्रोत गीत और नृत्य चल रहे थे। सोशल मीडिया पर महापुरुषों के वीडियो, रीलें और संदेशों की बाढ़ आई हुई थी। आना भी चाहिए।

वह पुस्तकालय में बैठकर समाचार-पत्र पढ़ने लगा–यह जानने के लिए कि इतनी सारी प्रेरणाओं के ज्वार के बीच लोग वर्तमान में देश के लिए क्या कर रहे हैं।

समाचार-पत्रों से पता चला कि सुख-सुविधा देने वाले आविष्कार भले ही यूरोप, अमेरिका, और चीन में हुए हों, लेकिन कम समय में हर हालत में सफल होने की तकनीक में हमारे अनेक देशवासी भी पीछे नहीं हैं। उन्हानें उस पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी की उस प्रेरणा का पीछे छोड़ दिया है जिसमें उन्होने कहा था–'' बेईमानी से प्राप्त सफलता की अपेक्षा ईमानदारी से कदाचित असफलता भी मिलती हो तो वह बेहतर है।'

एक के बाद एक आउट होते प्रश्नपत्र, पकड़े जाते डमी परीक्षार्थी, फर्जी डिग्रियों का भंडाफोड़, आम से लेकर खास तक को अपने जाल में फँसाते साइबर ठग, आए दिन ट्रैप होते लोकसेवक–सब अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं।

आखिर साक्षरता प्रतिशत बढ़ा है। शिक्षा का स्तर ऊँचा उठा है। स्कूलों, कॉलेजों और कोचिंग संस्थानों की बाढ़ यूँ ही नहीं आई।

अभी हाल ही में जौनपुर (उत्तर प्रदेश) के एक युवक ने चिकित्सक बनने के लिए दिव्यांग प्रमाण-पत्र पाने हेतु अपने पैर का पंजा काट डाला–ताकि 'साँप भी मर जाए और लाठी भी कम-से-कम टूटे' वाली उक्ति चरितार्थ हो जाए। यदि पुलिस बीच में न आती, तो वह आज किसी अस्पताल में मरीजों की सेवा कर रहा होता।

यही नहीं,राजस्थान में भी विद्युत विभाग की भर्ती में फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्रों के समाचार छपे। सुना है तलाक़शुदा होने के प्रमाण-पत्र से सेवा-अधिकार पाने वाली कुछ महिलाओं ने अपने पतियों का साथ कभी नहीं छोड़ा। फर्जी नोट और फर्जी डिग्रियों का भंडाफोड़ भी आए दिन होता रहता है।

इससे सिद्ध होता है कि जिनके मन में सरकारी सेवा का ज़ज्बा पैदा हो जाए, वे सिर पर कफ़न बाँधकर भी कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेते हैं। जीवन एक शतरंज है। यहाँ शक्ति पाने के लिए प्यादे को अक्सर फर्जी बनना पड़ता है। फर्जी बनते ही उसे वही अधिकार मिल जाते हैं, जो असली मोहरे को मिलते हैं। दुर्भाग्य यह है कि ऐसी प्रतिभा पर गर्व करने के बजाय उन्हें जेल भेज दिया जाता है।

अब उसे उत्तर मिल गया था–

कुछ लोग देश के लिए बहुत कुछ कर रहे हैं।

भारतीय समाचार पत्र दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारतीय समाचार पत्रों की भूमिका ऐतिहासिक

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास 29 जनवरी, 1780 से प्रारंभ माना जाता है, जब जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) से 'हिक्कीज बंगाल गजट' का प्रकाशन किया। इसे 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' के नाम से भी जाना जाता था। यह न केवल भारत का बल्कि एशिया का पहला मुद्रित समाचार पत्र था। उस दौर में, जब संचार के साधन अत्यंत सीमित, धीमे और महंगे थे, तब इस समाचार पत्र ने सूचनाओं को जनता तक पहुंचाने का एक सुलभ और प्रभावी माध्यम प्रदान किया। समाचारों के कई दिनों में पहुंचने की विवशता के बीच मुद्रित पत्रकारिता ने समय, सत्ता और समाज के संबंधों को नई दिशा दी। 'हिक्कीज बंगाल गजट' केवल समाचार पत्र नहीं था बल्कि वह सत्ता के विरुद्ध निर्भीक अभिव्यक्ति का मंच था। इसमें प्रकाशित लेख व्यंग्यात्मक, आलोचनात्मक और विचारोत्तेजक होते थे।

प्रतिवर्ष 29 जनवरी को 'भारतीय समाचार पत्र दिवस' मनाया जाता है, जो भारत में पत्रकारिता की गौरवशाली परंपरा, प्रेस की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक चेतना का प्रतीक है। यह दिन हमें उस ऐतिहासिक क्षण की ओर ले जाता है, जब भारत की धरती पर पहली बार मुद्रित शब्दों ने सत्ता से निर्भीक होकर प्रश्न पूछने का साहस किया था और सूचनाओं की रोशनी आम जन तक पहुंची थी। समाचार पत्रों ने न केवल समाज को घटनाओं से अवगत कराया बल्कि जनमत निर्माण, सामाजिक सुधार और राष्ट्र चेतना को भी दिशा दी। यह दिवस लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को सम्मान देने का अवसर है, उस स्तंभ को, जिसने जनता को सोचने, समझने, तर्क करने और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की शक्ति प्रदान की।

भारतीय पत्रकारिता का इतिहास 29 जनवरी, 1780 से प्रारंभ माना जाता है, जब जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) से 'हिक्कीज बंगाल गजट' का प्रकाशन किया। इसे 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' के नाम से भी जाना जाता था। यह न केवल भारत का बल्कि एशिया का पहला मुद्रित समाचार पत्र था। उस दौर में, जब संचार के साधन अत्यंत सीमित, धीमे और महंगे थे, तब इस समाचार पत्र ने सूचनाओं को जनता तक पहुंचाने का एक सुलभ और प्रभावी माध्यम प्रदान किया। समाचारों के कई दिनों में पहुंचने की विवशता के बीच मुद्रित पत्रकारिता ने समय, सत्ता और समाज के संबंधों को नई दिशा दी। 'हिक्कीज बंगाल गजट' केवल समाचार पत्र नहीं था बल्कि वह सत्ता के विरुद्ध निर्भीक अभिव्यक्ति का मंच था। इसमें प्रकाशित लेख व्यंग्यात्मक, आलोचनात्मक और विचारोत्तेजक होते थे। यह अखबार वॉरेन हेस्टिंग्स जैसे ब्रिटिश अधिकारियों की नीतियों और आचरण पर खुलकर टिप्पणी करता था। हिक्की का अखबार वर्जित विषयों, सामाजिक असमानताओं, कराधान के अधिकार और गरीबों के प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों को उठाता था। यह उस समय की प्रारंभिक वर्ग चेतना को स्वर देने का प्रयास था।

ब्रिटिश सरकार को शीघ्र ही यह अहसास हो गया कि स्वतंत्र प्रेस सत्ता के लिए असहज हो सकता है। परिणामस्वरूप, 1782 में हिक्कीज बंगाल गजट पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यद्यपि इस समाचार पत्र का प्रकाशन अल्पकालिक रहा परंतु इसने भारतीय प्रेस की आत्मा को जन्म दे दिया।

हिक्की के बाद भारत में मद्रास कूरियर, बॉम्बे हेराल्ड, बंगाल जर्नल जैसे अनेक समाचार पत्रों का उदय हुआ किंतु औपनिवेशिक शासन के काल में प्रेस को लगातार सेंसरशिप, दमन और कठोर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। ब्रिटिश सरकार स्वतंत्र पत्रकारिता को अपने शासन के लिए खतरा मानती थी। इसी मानसिकता के तहत 1878 में लॉर्ड लिटन द्वारा वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट लागू किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित अखबारों को नियंत्रित करना था। इस कानून के अंतर्गत सरकार को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह किसी भी 'आपत्तिजनक' समाचार, लेख या टिप्पणी को जब्त कर सके और प्रेस पर कठोर कार्रवाई कर सके। यह अधिनियम औपनिवेशिक सत्ता की उस भयग्रस्त सोच का प्रतीक था, जो स्वतंत्र विचार और जनजागरण से असहज थी। भारतीय समाचार पत्र दिवस का महत्व तब और अधिक स्पष्ट होता है, जब हम स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस की ऐतिहासिक भूमिका पर दृष्टि डालते हैं। 'केसरी', 'प्रताप', 'यंग इंडिया', 'हरिजन' और 'स्वराज्य' जैसे समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राष्ट्रवादी चेतना को जन-जन तक पहुंचाया। इन पत्रों के माध्यम से जनता में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न हुई और स्वतंत्रता का विचार व्यापक हुआ। बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, गणेश शंकर विद्यार्थी और मदन मोहन मालवीय जैसे राष्ट्रनायकों ने पत्रकारिता को केवल सूचना का साधन नहीं बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन का सशक्त हथियार बनाया। समाचार पत्रों ने

औपनिवेशिक नीतियों का निर्भीक विरोध किया तथा जनजागरण, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने पत्रकारिता को औपनिवेशिक नियंत्रण और दमन से मुक्त करने की दिशा में ठोस कदम उठाए। प्रेस की भूमिका और जिम्मेदारियों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 1954 में प्रथम प्रेस आयोग का गठन किया गया। इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1966 में प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की स्थापना हुई, जिसका प्रमुख उद्देश्य पत्रकारिता के नैतिक मानकों की रक्षा करना तथा प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना था। हालांकि 1975 के आपातकाल के दौरान अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर गंभीर आघात पहुंचा और प्रेस काउंसिल को भंग कर दिया गया लेकिन 1979 में इसकी पुनः स्थापना ने यह सिद्ध कर दिया कि स्वतंत्र, निष्पक्ष और उत्तरदायी प्रेस भारतीय लोकतंत्र का अनिवार्य आधार है। समाचार पत्र केवल दैनिक घटनाओं का संकलन नहीं होते बल्कि वे समाज के बौद्धिक, नैतिक और वैचारिक विकास का सशक्त माध्यम होते हैं। विशेष रूप से बच्चों और युवाओं के लिए अखबार अत्यंत उपयोगी हैं क्योंकि वे उनकी शब्दावली का विस्तार, पढ़ने-समझने की क्षमता में वृद्धि और विश्लेषणात्मक व आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करते हैं। समाचार पत्र समसामयिक घटनाओं से परिचित कराकर युवाओं को जागरूक और विचारशील नागरिक बनाते हैं। इनके माध्यम से पाठक अपने अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक मुद्दों को समझते हैं, जिससे जिम्मेदार नागरिकता विकसित होती है। नियमित रूप से अखबार पढ़ने की आदत नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देती है और लोकतंत्र को अधिक सशक्त, सजग और उत्तरदायी बनाती है।

आज का युग डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया का है, जहां सूचनाएं अत्यंत तीव्र गति से प्रसारित होती हैं किंतु इस गति के साथ ही अफवाहें, अपुष्ट खबरें और भ्रामक सूचनाएं भी समान रूप से फैल जाती हैं, जो समाज को भ्रमित कर सकती हैं। ऐसे समय में समाचार पत्रों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। अखबार तथ्य-जांच, विश्वसनीय स्रोतों और संपादकीय जिम्मेदारी के आधार पर समाचार प्रस्तुत करते हैं। वे घटनाओं का केवल वर्णन नहीं करते बल्कि उनके कारणों, प्रभावों और व्यापक संदर्भों का गहन विश्लेषण भी देते हैं। समाचार पत्र संतुलित और विवेकपूर्ण संपादकीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो पाठकों को सोचने और निष्कर्ष निकालने की क्षमता देता है। जहां सोशल मीडिया के एल्गोरिदम अक्सर युवाओं को सीमित रुचियों और विचारों के दायरे में बांध देते हैं, वहीं समाचार पत्र दुनिया को व्यापक, समावेशी और वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखने का अवसर प्रदान करते हैं।

भारतीय समाचार पत्र दिवस हमें याद दिलाता है कि प्रेस की स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है। यह दिवस पत्रकारों, संपादकों, संवाददाताओं, लेखकों और उन सभी व्यक्तियों को सम्मान देता है, जो सत्य को सामने लाने के लिए जोखिम उठाते हैं। यह दिन युवाओं को प्रेरित करता है कि वे समाचार पत्र पढ़ने की आदत विकसित करें, प्रश्न करें, सोचें और जिम्मेदार नागरिक बनें। यह दिवस केवल अतीत का स्मरण नहीं है बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक चेतावनी और प्रेरणा भी है। यह दिन हमें बताता है कि जब तक प्रेस स्वतंत्र, निष्पक्ष और सजग रहेगा, तब तक लोकतंत्र जीवंत रहेगा। 1780 में हिक्की के साहसिक प्रयास से शुरू हुई यह यात्रा आज भी नए माध्यमों, नई चुनौतियों और नई जिम्मेदारियों के साथ जारी है। बहरहाल, 29 जनवरी को मनाया जाने वाला यह दिवस भारतीय पत्रकारिता की उस अखंड परंपरा को नमन है, जिसने शब्दों को शक्ति और सच्चाई को स्वर दिया।

मार्क टुली

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारत को 'देखने' नहीं, 'समझने' वाला पत्रकार

आपातकाल (1975-77), इंदिरा गांधी का राजनीतिक दौर, राजीव गांधी का उदय, राम जन्मभूमि आंदोलन, मंडल राजनीति, आर्थिक उदारीकरण और ग्रामीण भारत की जमीनी सच्चाइयाँ—इन सभी विषयों को उन्होंने सत्ता-केंद्रित दृष्टि से नहीं, बल्कि समाज-केंद्रित संवेदना से देखा। उनकी पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे केवल दिल्ली के सत्ता गलियारों तक सीमित नहीं रहते थे। वे गाँवों, कस्बों, तीर्थस्थलों और आम लोगों के बीच जाकर भारत को समझते थे। उनके लिए पत्रकारिता एक सभ्यतागत अध्ययन थी।

24 अक्टूबर 1936 को जन्मे और 25 जनवरी 2026 को इस संसार से विदा हुए मार्क टुली का जीवन केवल एक अंतरराष्ट्रीय पत्रकार की जीवनी नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी बौद्धिक और नैतिक यात्रा है, जिसमें भारत को बाहर से नहीं, भीतर से समझने की ईमानदार कोशिश दिखाई देती है। उनके निधन का समाचार पत्रकारिता जगत के लिए ही नहीं, बल्कि भारत को समझने वाली संवेदनशील वैश्विक दृष्टि के लिए भी एक अपूरणीय क्षति है। ब्रिटेन में जन्म लेने के बावजूद मार्क टुली ने भारत को अपने जीवन का केंद्र बनाया। वे उन विरले विदेशी पत्रकारों में थे जिन्होंने भारत को केवल 'स्टोरी' नहीं, बल्कि सभ्यता, समाज और आत्मा के रूप में देखा। भारत में दीर्घ पत्रकारिता यात्रा : सत्ता से आगे समाज की खोज मार्क टुली का भारत प्रवास कोई क्षणिक पेशेवर पड़ाव नहीं था। उन्होंने अपने जीवन के कई दशकों भारत में बिताए और बीबीसी के भारत संवाददाता के रूप में भारतीय राजनीति, लोकतंत्र और सामाजिक संरचना के निर्णायक कालखंडों के साक्षी बने।

आपातकाल (1975-77), इंदिरा गांधी का राजनीतिक दौर, राजीव गांधी का उदय, राम जन्मभूमि आंदोलन, मंडल राजनीति, आर्थिक उदारीकरण और ग्रामीण भारत की जमीनी सच्चाइयाँ—इन सभी विषयों को उन्होंने सत्ता-केंद्रित दृष्टि से नहीं, बल्कि समाज-केंद्रित संवेदना से देखा। उनकी पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे केवल दिल्ली के सत्ता गलियारों तक सीमित नहीं रहते थे। वे गाँवों, कस्बों, तीर्थस्थलों और आम लोगों के बीच जाकर भारत को समझते थे। उनके लिए पत्रकारिता एक सभ्यतागत अध्ययन थी।

हिंदी के प्रति लगाव : भाषा नहीं, लोक-चेतना से संवाद मार्क टुली का हिंदी के प्रति लगाव उनके भारत प्रेम का सबसे सशक्त प्रमाण था। उन्होंने हिंदी को केवल संवाद की सुविधा नहीं, बल्कि भारतीय लोक-चेतना तक पहुँचने का माध्यम माना। उनकी हिंदी में आत्मीयता थी, सम्मान था और समझ थी। वे यह भलीभांति जानते थे कि भारत को केवल अंग्रेज़ी के माध्यम से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। हिंदी पत्रकारिता जगत में उन्हें इसलिए विशेष सम्मान मिला क्योंकि वे भाषा के साथ-साथ

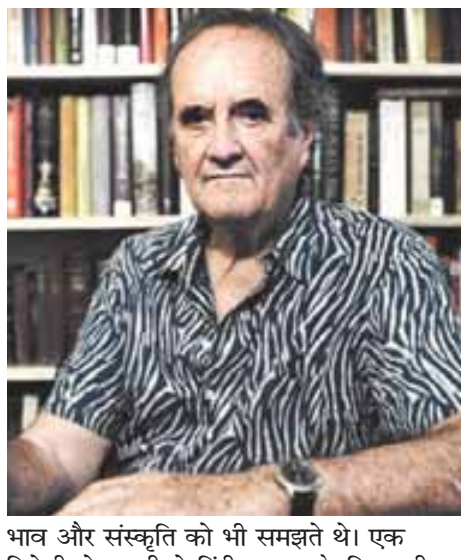

भाव और संस्कृति को भी समझते थे। एक विदेशी होकर भी वे हिंदी समाज के विश्वसनीय संवादकर्ता बन गए।

भारत के प्रति दृष्टिकोण– आलोचना में भी अपनापन मार्क टुली भारत के आलोचक थे, लेकिन उनकी आलोचना औपनिवेशिक दृष्टि से नहीं, बल्कि एक शुभचिंतक की चिंता से उपजी होती थी। वे भ्रष्टाचार, प्रशासनिक विफलताओं और सामाजिक अंतर्विरोधों पर खुलकर लिखते थे, परंतु भारत की सांस्कृतिक जड़ों, परंपराओं और आस्थाओं के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान था। वे मानते थे कि भारत की आधुनिकता पश्चिम की नकल से नहीं, बल्कि अपनी परंपराओं के साथ संतुलन बनाकर विकसित होनी चाहिए। यही दृष्टि उन्हें साधारण विदेशी संवाददाताओं से अलग करती है।

लेखन प्रतिभा : पत्रकार से आगे कथाकार मार्क टुली की प्रतिभा केवल रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं थी। वे एक उत्कृष्ट कथात्मक पत्रकार (Narrative Journalist) थे।

उनकी प्रमुख कृतियाँ–
No Full Stops in India
India in Slow Motion
The Heart of India
–भारतीय समाज के जीवंत, बहुस्तरीय और संवेदनशील दस्तावेज़ हैं। वे भारत को 'स्लो मोशन' में देखते थे, क्योंकि वे जानते थे कि यह देश त्वरित निष्कर्षों से नहीं, धैर्यपूर्ण समझ से पकड़ा जाता है।

सभ्यताओं के बीच सेतु मार्क टुली पश्चिम और भारत के बीच एक दुर्लभ बौद्धिक सेतु थे। उन्होंने पश्चिम को भारत की जटिलताओं, आस्थाओं और अंतर्विरोधों से परिचित कराया और भारत को यह भरोसा दिया कि विदेशी दृष्टि भी निष्पक्ष, विनम्र और सम्मानपूर्ण हो सकती है। वे औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त, पर वैश्विक दृष्टि से सजग पत्रकार थे—यही उनकी सबसे बड़ी पहचान और प्रतिभा थी। समकालीन पत्रकारिता के लिए उनकी विरासत आज जब पत्रकारिता शोर, ध्रुवीकरण और तात्कालिकता से ग्रस्त होती जा रही है, मार्क टुली का जीवन हमें यह स्मरण कराता है कि– पत्रकारिता का उद्देश्य उत्तेजना नहीं, समझ पैदा करना है भाषा सत्ता का औजार नहीं, समाज से संवाद का माध्यम है और सच्ची पत्रकारिता विचारधारा से नहीं, विवेक से संचालित होती है 24 अक्टूबर 1936 को जन्मे और 25 जनवरी 2026 को दिवंगत मार्क टुली को भारत केवल एक विदेशी पत्रकार के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे संवेदनशील अध्येता के रूप में याद करेगा जिसने भारत को समझने की ईमानदार कोशिश की।

स्मृति शेष

ऋतुपर्ण दवे

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

मार्क टुली : जब बीबीसी लंदन बना भारत की आवाज

भारत को लेकर विदेशियों की राय भी प्रायः अलग-अलग रहती है। पत्रकार बिरादरी तो और भी अलग नजरिए से देखती है। भारत को कभी आध्यात्म तो कभी ऐसा देश समझते हैं जहां काफी कुछ ठीक नहीं लगता। लेकिन मार्क का नजरिया भारत के प्रति हमेशा से अलग रहा। उन्होंने न भारत को पर्यटन स्थल समझा और न ही विदेशियों की भांति उपनिवेशवादी मानसिकता से देखा। वो तो एक चलता, फिरता, हाड़मांस का पुतला बनकर भारत में रहे, जो दिखा वही लिखा और कहा। इसी विशेषता ने भारत में इतना भरोसेमंद और लोकप्रिय बना दिया कि एक समय आया और अभी भी है कि कहीं भीतर या मोहल्ले की गुप्त बातें भी साझा होती हैं तो कहा जाता कि बीबीसी लंदन की पक्की खबर है, गलत कैसे होगी! इतनी विश्वनीयता वह भी उस दौर में जब भारतीय मीडिया पूरी तरह से सरकार के नियंत्रण में थी के बहुत कुछ मायने हैं। निश्चित रूप से मार्क टुली के निधन से भारत ने अपना एक सच्चा दोस्त खो दिया है।

एक जांबाज पत्रकार, वो शख्सियत जिसकी विश्वसनीयता ने भारत में विदेशी ब्रॉडकास्टर बीबीसी को वो पहचान दिलाई जो दुनिया में शायद ही किसी को मिली हो। यारों का यार होकर भी रिपोर्टिंग करते वक्त उसूलों से समझौता न करने वाली रिपोर्ट के धनी मार्क टुली भारत में ही जन्मे भारत की मिट्टी में आखिरी सांस भी ली। फक गोरा होकर भी भारतीय परिवेश में रंगे टुली जब फर्राटेदार कवरेज करते तो बरबस ही मुंह से निकलता ये गोरा कोई कैसा लंदन का। जीवन में जो सादगी, विनम्रता सहजता, संतुलन और सरलता उनमें बेमिशाल थी। दिखावे और ठाठ-बाट से दूर रहने वाले मार्क का जन्म 24 अक्टूबर 1935, टालीगंज, कोलकाता में हुआ और आखिरी सांस देश की राजधानी नई दिल्ली में 25 दिसंबर 2026 को ली।

भारत को लेकर विदेशियों की राय भी प्रायः अलग-अलग रहती है। पत्रकार बिरादरी तो और भी अलग नजरिए से देखती है। भारत को कभी आध्यात्म तो कभी ऐसा देश समझते हैं जहां काफी कुछ ठीक नहीं लगता। लेकिन मार्क का नजरिया भारत के प्रति हमेशा से अलग रहा। उन्होंने न भारत को पर्यटन स्थल समझा और न ही विदेशियों की भांति उपनिवेशवादी मानसिकता से देखा। वो तो एक चलता, फिरता, हाड़मांस का पुतला बनकर भारत में रहे, जो दिखा वही लिखा और कहा। इसी विशेषता ने भारत में इतना भरोसेमंद और लोकप्रिय बना दिया कि एक समय आया और अभी भी है कि कहीं भीतर या मोहल्ले की गुप्त बातें भी साझा होती हैं तो कहा जाता कि बीबीसी लंदन की पक्की खबर है, गलत कैसे होगी! इतनी विश्वनीयता वह भी उस दौर में जब भारतीय मीडिया पूरी तरह से सरकार के नियंत्रण में थी के बहुत कुछ मायने हैं। निश्चित रूप से मार्क टुली के निधन से भारत ने अपना एक सच्चा दोस्त खो दिया है।

मार्क टुली के पिता एक रईस अंग्रेज थे जो व्यापारिक एजेंसी, गिलैंडर्स एंड अर्बुथनोट में वरिष्ठ भागीदार थे। ये तबकी बहुत बड़ी कंपनी थी जो कोयला खदानों, रेलवे और बीमा कंपनी का काम करती थी। उनकी मां का जन्म बांग्लादेश में हुआ था। बचपन के दस साल भारत में बिताया लेकिन भारतीयों से मिलने-जुलने की उन्हें आजादी नहीं थी। स्कूल शिक्षा खातिर उन्हें इंग्लैंड जाना पड़ा जहां ट्वाईफोर्ड स्कूल, मार्लबोरो कॉलेज और ट्रिनिटी हॉल तथा कैम्ब्रिज में पढ़े। धर्मशास्त्र का अध्ययन किया। विचार पादरी बनने का था लेकिन दो सत्रों के बाद ही इसे बदला और 1964 में बीबीसी में शामिल हुए।

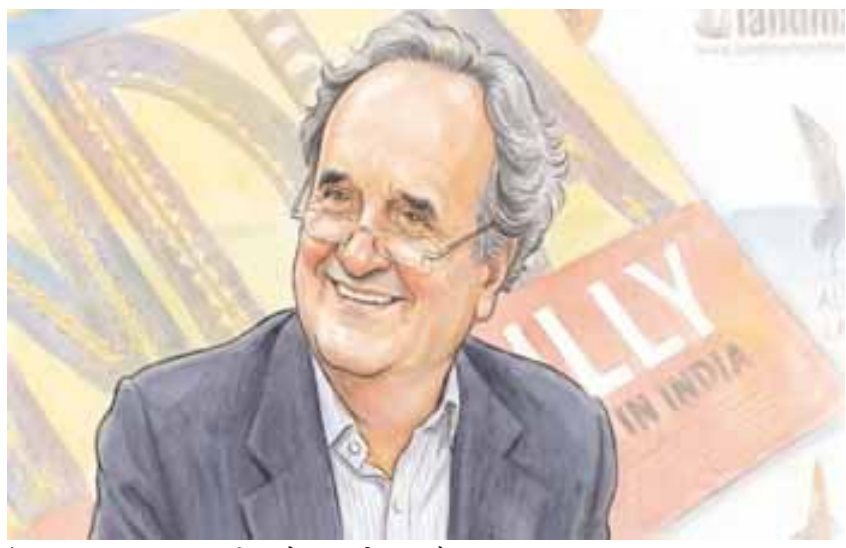

1960 के दशक में आकाशवाणी का बोलबाला था। मेल्विल डी मेलो जैसे बड़े नाम रेडियो पर राज करते थे। आकाशवाणी और रेडियो सीलोन का दबदबा था। ऐसे में रेडियो प्रसारण में जगह बनाना आसान नहीं था। लेकिन मार्क टुली की निष्ठा, लगन थी जो कर दिखाया। तमाम कठिनाइयों, सरकारी दबाव के बावजूद 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, 1971 का मुक्ति युद्ध और बांग्लादेश का जन्म, 1975 का आपातकाल, 1980 के दशक का पंजाब विद्रोह और 5 जून, 1984 का ऑपरेशन ब्लू स्टार कवर कर न केवल वो खास मुकाम बनाया बल्कि उन्हें इतिहास का प्रत्यक्ष गवाह बनने का मौका भी मिला। अन्य चर्चित कवरेजों में इंदिरा गांधी की हत्या, सिख विरोधी दंगे, राजीव गाँधी की हत्या एवं बाबरी मस्जिद विध्वंस भी रहे। आपातकाल में निष्पक्षता के चलते इंदिरा गाँधी उन्हें गिरफ्तार करना चाहती थीं तो कुछ दिनों के लिए लंदन चले गए। 1975 के आपातकाल पर उनकी पुस्तक 'इंडियाज अनएंडिंग जर्नी' तो 1978 के प्रयागराज कुंभ का व्यापक कवरेज और उनकी पुस्तक 'नो फुल स्टॉप्स इन इंडिया' पर इस सबसे बड़े मेले का पूरा वृतांत काफी चर्चाओं में रहा।

मार्क टुली को दक्षिण एशिया की पूरी जानकारी और समझ थी। इन देशों में व्यापक भ्रमण और कवरेज किया। जहां भी जाते केवल प्रशासनिक या राजनीतिक जानकारियां भर नहीं जुटाते बल्कि वहां के भू-भाग, सामाजिक ताने-बाने, संस्कृति, रीति-रिवाज भाषा, दाना-पानी, परंपरा और खान-पान से भी जुड़, समझ, उसे अनुभव करते। उनकी सादगी ने उन्हें एक अद्वितीय पत्रकार बनाया। पूरी उम्र उनके व्यक्तित्व में कहीं कोई अहंकार नहीं दिखा। भारतीय वेशभूषा उन्हें बेहद पसंद थी। इतनी कि लंदन जाते तो कई बार विशेष स्थानों पर बिना टाई लगाए ही पहुंच जाते जहां यह अनिवार्य थी। वहां उन्हें रिसेप्शन पर उधार लेनी पड़ता।

वो भारत की सबसे बड़ी ताक़त उसकी स्थिरता को जबकि सबसे बड़ी खूबी विभिन्न धर्मावलंबियों की एकजुटता को मानते रहे। वो भारत को वो भूमि मानते जहां पहाड़, रेगिस्तान, समुंदर के किनारे हैं। भारत में इंगलैंड जैसी मॉडर्न पुलिसिंग के पक्षधर मार्क थानेदार प्रणाली से नाखुश रहते। वो भारत में अंग्रेजों के जमाने से जारी बाबूगिरी को नाकाम मानते रहे। गांवों तक से उन्हें शिकायत मिलती कि बाबू लोग सुनवाई नहीं करते क्योंकि उनकी अब भी लोगों के ऊपर राज करने की सोच नहीं बदली है।

उनकी संवेदनशीलता की यही बानगी उन्हें पत्रकार बिरादरी में सबसे अलग जगह दिलाती है। मार्क टुली हों या बीबीसी लंदन ये जुमला आज भी विश्वनीयता का पर्याय बना हुआ है। 2002 में नाइटहुड से सम्मानित और 2005 में पद्म भूषण से नवाजे गए सर मार्क टली, प्रेस क्लब ऑफ इंडिया और इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का एक जाना-पहचाना चेहरा थे जहां हमेशा बातचीत खातिर उपलब्ध रहते। वाकई नारद के इस वंशज को आधुनिक नारद अवतार कहा जाए तो बेजा नहीं होगा।

गणतंत्र दिवस पर जिला प्रशासन ने देहदानी परिवार का सम्मान किया गया

11 जनवरी को हीरालाल जी बापूलालजी जैन का निधन होने पर उनकी देहदान की गई थी

धार। 11 जनवरी को हीरालाल जी बापूलालजी जैन का निधन होने पर नेत्रदान, त्वचा दान के साथ उनकी देहदान की गई थी । गणतंत्र दिवस पर जिला प्रशासन ने देहदानी परिवार का सम्मान किया । परेड ग्राउंड पर अपने ससुर हीरलालजीबापूलालजी के देहदान करने पर शासन की और से कलेक्टर प्रियंक मिश्र एवं विधायक नीना वर्मा द्वारा शैलेंद्र जैन

का सम्मान किया गया। धार मानव सेवा कल्याण समिति द्वारा 11 जनवरी को मंदसौर निवासी हिरालालजी बापूलालजी जैन का नेत्रदान, त्वचा दान के साथ धार नगर का तीसरा देहदान किया गया था इस अवसर पर उन्हे शासन की ओर से धार नगर में प्रथम बार गार्ड ऑफ आनर भी दिया गया था। देहदान करने पर मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा 15 अगस्त और 26 जनवरी पर देहदान करने वालो के परिवारजनों के सम्मान की घोषणा की गई थी। विगत वर्ष भी देहदान करने वाले धार नगर के दोनों देहदानी हिम्मतलालजी जैन एवं मनोहरजी अग्रवाल के परिवारजनों का सम्मान प्रशासन की ओर से विगत 26 जनवरी पर किया जा चुका है।

ग्राम रेवा बनखेड़ी में नर्मदा जयंती के उपलक्ष्य में नर्मदाष्टक, उमड़ा जनसैलाब

सुबह सवेरे, सोहागपुर। सोहागपुर से 17किलोमीटर दूर ग्राम रेवा बनखेड़ी नर्मदा नदी घाट पर नर्मदा जयंती के अवसर पर विशाल आयोजन किया गया।इस अवसर पर रेवा बनखेड़ी ही नहीं सोहागपुर, धपाडा,रानीगोहान तथा आस-पास के ग्रामों के ग्रामीण महिलाओं,नगर नागरिकों, युवाओं एवं बच्चों जन सैलाब उमड़ा। उल्लेखनीय है कि नर्पमदा जयंती के अवसर पर ग्राम रेवा बनखेड़ी के नागरिक भव्य आयोजन करके गेट नुमा पेन्टी लगाकर गुब्बारों से सजावट की गई थी।

शाम को मां नर्मदा की आरती नर्मदाष्टक के साथ की गई।। वहीं नर्मदा नदी घाट के तीरे आटे के दीपकों से आरती करके जल में प्रवाहित किया गय। जिसका नजारा अत्यंत सुंदर लग रहा था। नागरिकों की नर्मदाष्टक आरती की सेल्फी एवं वीडियो बनाकर अपना मनोरंजन भी कर रहे थे। रेवा बनखेड़ी घाट पर दोपहर 4 बजे से सोहागपुर के शैलेन्द्र श्रीवास्तव,राहुल सराठे, जितेंद्र सराठे आदि नर्मदा घाट पर भंडारे का आयोजन किया। आपने बताया कि हम प्रति ।इस साल भंडारे का आयोजन करते हैं। जिसमें रेवा बनखेड़ी सोहागपुर एवं आस-पास के महिलाओं, बच्चों एवं नागरिकों ने भंडारे की प्रसादी ग्रहण करते हैं। ग्राम के माधवसिंह गुजर ने बताया कि प्रति वर्ष हमारे ग्रामवासी मिलकर नर्मदाष्टक आरती का आयोजन करते हैं। जिसमें क्षेत्र के नागरिक अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। वहीं वहां पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया जाता है। आरती स्थल पर नर्मदा लिखने के आकार को दीपों से सजाया गया था। जिसकी सजावट उत्कृष्ट रंग रही थी।

पत्तियां तोड़ने पेड़ पर चढ़ी महिला की करंट लगने से मौत

बैतूल। बैतूल बाजार थाना क्षेत्र के हणोतिया गांव में एक दर्दनाक हादसा हो गया। खेत में काम कर रही एक महिला की करंट लगने से मौत हो गई। इस घटना से गांव में शोक का माहौल है और परिजन गहरे सदमे में हैं। मिली जानकारी के अनुसार 45 वर्षीय कमलती पति पंजाब राव परते खेत में बकरियों के लिए पत्तियां तोडने पेड़ पर चढ़ी थीं। इसी दौरान उनका संतुलन बिगड़ गया और वह नीचे गिरने लगीं। गिरते समय उन्होंने खेत के पास से गुजर रही बिजली की मेन लाइन का तार पकड़ लिया। तार में तेज करंट होने के कारण महिला को जोर का झटका लगा और वह जमीन पर गिर पड़ीं। हादसे के बाद आसपास मौजूद लोगों और खेत मालिक ने तुरंत महिला को जिला अस्पताल पहुंचाया। हालांकि डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मामले की जांच की। पुलिस चौकी के माध्यम से शव का पोस्टमार्ट्म कराया गया और बाद में शव परिजनों को सौंप दिया गया।

बाइक को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर, युवक की मौत

बैतूल। झल्लार थाना क्षेत्र के अंतर्गत गुल्लर ढाणा के पास सडक़ हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार बेल ढाना, थाना भैंसदेही निवासी सतीश डिकारे (20 वर्ष) अपने साथी अभिषेक गुणवंत राव (22 वर्ष) के साथ बाइक से जा रहा था। रास्ते में किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों युवक सडक़ पर गिर पड़े और गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद स्थानीय लोगों की मदद से दोनों घायलों को तुरंत भैंसदेही के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। अभिषेक की हालत गंभीर होने पर उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया, जहां उसे आईसीयू में भर्ती किया गया है। वहीं सतीश को भी जिला अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान कुछ देर बाद उसकी मौत हो गई। बताया गया है कि उसके पिता मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं और सतीश ही अपने परिवार का एकमात्र सहारा था। घटना की सूचना मिलने पर जिला अस्पताल पुलिस चौकी ने सतीश का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया।

नई खदानों से 10 लाख घनमीटर निकलेगी रेत, सिया की अनुमति मिलना बाकी

जिले में शुरू होगी रेत की 15 नई खदानें

बैतूल। जिले में जल्द ही 15 नई रेत खदानें शुरू होने वाली हैं। इन खदानों के खुलने से शासन के राजस्व में वृद्धि होगी और अनुमान है कि जिलेवासियों को भी इसका लाभ मिलेगा। बताया जा रहा है कि खनिज विभाग ने जिले में रेत खदानों को चिह्नित कर रेत खदान घोषित करने की प्रक्रिया पूर्ण कर ली है। माइनिंग प्लान भी एप्रवु हो चुका है और सर्वे रिपोर्ट भी बन चुकी है। अब इसे पर्यावरणीय स्वीकृति के लिए सिया (स्टेट लेवल इम्पेक्ट असेस्मेंट अथॉरिटी) को भिजवाया जाएगा। सिया की अनुमति मिलते ही इन खदानों से रेत निकालना शुरू हो जाएगा। बता दे कि वर्तमान में जिले में 32 रेत खदानें चल रही हैं। इन नई रेत खदानों के शुरू होने पर इनकी संख्या 47 ही जाएगी। इससे शासन को मिलने वाला राजस्व तो बढेगा ही, अवैध रेत खनन पर भी रोक लगेगी। जिले की नदियों में कई स्थान ऐसे हैं, जहां पर बड़ी मात्रा में रेत होती है, लेकिन उन्हें खदान घोषित नहीं किया गया। इसके चलते उन स्थानों को बतौर खदान नीलाम भी नहीं किया जाता। इससे शासन को राजस्व का खासा नुकसान होता है। यही कारण है कि समय-समय पर ऐसे स्थानों को चिन्हित कर इन्हें विधिवत रूप से रेत खदान घोषित कर नीलाम किए जाने की कार्यवाही की जा रही है। विधिवत खदान घोषित हो जाने से इन्हें बाकायदा नीलाम किया जा सकता है और शासन को राजस्व प्राप्त होगा।

अभी जिले में रेत की 32 खदानें संचालित- पहले जिले में रेत की 42 खदाने थी, हालांकि इसमें से कुछ रेत खदानों को सिया की अनुमति नहीं मिल सकी। इसके चलते इन खदानों को बंद कर दिया गया। शेष 32 खदानों से वर्तमान में रेत निकाली जा रही है। अब 15 नई खदानों को मंजूरी मिलने के बाद जिले में खदानों को संख्या बहकर 47 हो जाएगी। इससे रेत भी अधिक मात्रा में निकाली जा सकेगी। नई खदानों को नवंबर माह में मंजूरी मिली थी। इसके बाद स्टेट माइनिंग कॉर्पोरेशन ने माइनिंग प्लान बनाया, जिसे एप्रुवल मिल चुका है। इसके बाद सर्वे रिपोर्ट भी तैयार हो चुकी है। जिले के कुछ नागरिकों का अनुमान है कि नई खदानों के खुलने से जिले में रेत की कीमतों में थोड़ा फर्क आयेगा यानि वर्तमान में अपेक्षा रेत के दामों में कमी आ सकती है। हालांकि अभी इस बारे में स्पष्ट कुछ नहीं कहा सकता है कि नई खदाने खुलने के बाद रेत के दाम कम होगे या नहीं।

तीन ब्लाक में यह 15 खदानें होगी शुरू - बताया जा रहा है कि जिले में जिन 15 नई खदानों को मंजूरी मिली है, उसमें शाहपुर ब्लाक में चिखलीरैयत पंचायत में मोरंड नदी पर तेंदूखेड़ा खदान, पाठई पंचायत में माचना नदी पर पाठई खदान, गुवाड़ी पंचायत में तवा नदी पर गुवाड़ी-1, गुवाड़ी-2, गुवाड़ी-3 ओर डेंडुपुरा 1 खदान, डाबरी पंचायत में मोरंड नदी पर डाबरी खदान, भौंरा पंचाय में तवा नदी पर गुरगुंदा-1 और गुरगुंदा-2 खदान तथा घोड़ाडोगरी ब्लाक की बंजारीढाल पंचायत में भडंगा नदी पर चिचडोल रैयत खदान, सातलदेही पंचायत में तवा नदी पर बांसपुर खदान, नूतनडंगा पंचायत में भडंगा नदी पर हिरनघाटी खदान, सातलदेही पंचायत में लोहर नदी पर कैली रैयत खदान और चिचोली ब्लाक में खपरिया पंचायत में मोरंड नदी पर खपरिया उर्फ परसदा-1 और 2 खदान शामिल है।

शासन को मिलने वाले राजस्व में होगी वृद्धि

जिले में वर्तमान में 32 रेत खदान है। बैतूल खनिज विभाग के उप संचालक मनीष पालेवार ने बताया कि इन रेत खदानों से शासन को रायल्टी के रूप में करीब 30 करोड़ रूपये का राजस्व हासिल होता है। यदि नई 15 रेत खदाने खुलेगी तो संभवत-शासन को मिलने वाले राजस्व में वृद्धि होगी। बताया जा रहा है कि जिले के शाहपुर, चिचोली और घोड़ाडोंगरी ब्लॉक में तवा, लोहार, भड़ंगा, मोरंड, माचना नदी में रेत का पर्याप्त भंडार है। इन नदियों पर वैसे तो खनिज विभाग की वैध खदानें हैं, लेकिन जिले की कुछ नदियों से अवैध तरीके से रेत भी निकाली जाती है, जो खनिज विभाग के रिकॉर्ड में शामिल नहीं हैं। यहां से खनिज माफियाओं द्वारा रेत का अवैध उत्खनन कर रेत बेचते है। इससे शासन को राजस्व नहीं मिलता। लेकिन नई रेत खदानों में यह शामिल होती है तो शासन को राजस्व का लाभ मिलेगा।

अभी मौजूदा कंपनी को 10 लाख घनमीटर का ठेका

जिले में नई खदानों को सिया की अनुमति मिलने के बाद अभी इनको नीलाम नहीं किया जायेगा। जिसके पीछे यह कारण बताया जा रहा है कि पुरानी कंपनी को 10 लाख घनमीटर क्षमता की खदानें दी गई थी, लेकिन इतनी रेत निकल नहीं पा रही हैं। इसके चलते खदान उसी कंपनी को दी जाएगी। कंपनी ने 27 करोड़ 27 लाख रुपये में जिले की खदानों का ठेका लिया था। यह राशि हर साल 10 प्रतिशत बढ़ जाती है। बताया जा रहा है कि इस साल नवंबर माह में यह ठेका समाप्त हो रहा है। कंपनी चाहे तो इसे दो साल के लिए आगे और बढ़ा सकती है। हालांकि नई खदानों को लेकर अधिकारियों का कहना है कि अभी नई रेत खदानों को शुरू होने में समय लगेगा। करीब दो से तीन माह की अवधि भी लग सकती है।

इनका कहना है-

जिले में 15 नई खदानों को नवंबर माह में स्वीकृति मिली थी। इसके बाद स्टेट माइनिंग कॉर्पोरेशन ने माइनिंग प्लान बनाया, जो कि अप्रुव हो चुका है। सर्वे रिपोर्ट भी बनाई जा चुकी है। सिया की अनुमति मिलते ही नई खदाने शुरू कर दी जायेगी। इसमें दो से तीन माह का समय लग सकता है। अभी जिस कंपनी का ठेका है, उसे 10 लाख घनमीटर रेत का ठेका मिला हुआ है।

- मनीष पालेवार, उप संचालक, खनिज विभाग, बैतूल

तीन दिवसीय विश्वकर्मा जयंती महोत्सव का शुभारंभ आज

धार्मिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक कार्यक्रम व बाइक रैली का होगा आयोजन

बैतूल। विश्वकर्मा (बढ़ई) समाज समिति के तत्वावधान में भगवान श्री विश्वकर्मा जी के जन्मोत्सव अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय जयंती महोत्सव का शुभारंभ आज से श्री विश्वकर्मा मंदिर बैतूल में किया जा रहा है। 29 से 31 जनवरी तक चलने वाले इस महोत्सव में धार्मिक अनुष्ठान, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विविध सामाजिक आयोजन होंगे, जिसमें समाज के सभी वर्गों की सहभागिता रहेगी। महोत्सव के प्रथम दिन आज 29 जनवरी को सुबह 10 बजे से भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी का अभिषेक, हवन, पूजन, छप्पन भोग एवं प्रसादी का आयोजन किया जाएगा। दोपहर 12 बजे तक प्रतिभावान छात्र-छात्राएं अपनी अंकसूची, प्रमाण पत्र एवं विशेष योग्यता की जानकारी मंदिर कार्यालय में जमा कर सकेंगे। कल 30 जनवरी शुक्रवार को दोपहर 1 बजे से महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। इसमें रंगोली, चित्रकारी, काष्ठ कला, क्राफ्ट कला, फैंसी ड्रेस, गायन, एकल व सामूहिक नृत्य, थाल सज्जा, काव्य पाठ एवं कुर्सी दौड़ प्रतियोगिताएं होंगी। रंगोली एवं चित्रकारी की सामग्री प्रतिभागियों को स्वयं लानी होगी तथा गायन के लिए सिंगल गाने की सीडी या पेनड्राइव लाना अनिवार्य रहेगा। समापन दिवस 31 जनवरी शनिवार को सुबह 8 से 10 बजे तक भगवान श्री विश्वकर्मा जी का अभिषेक, हवन, पूजन एवं प्रसादी होगी। इसके बाद सुबह 10 से 12 बजे तक विशाल बाइक रैली निकाली जाएगी। दोपहर 12 बजे से समाज की दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि, वयोवृद्धजनों का सम्मान, मुख्य अतिथियों एवं बाहर से आए अतिथियों का सम्मान, स्वागत उद्बोधन, प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान एवं पारितोष वितरण, सचिव द्वारा गत वर्ष के आय-व्यय एवं दानदाताओं की सूची का वाचन तथा अध्यक्ष का उद्बोधन व आभार प्रदर्शन किया जाएगा। दोपहर 2 बजे से भंडारा प्रसादी का आयोजन रहेगा।

सहयोगी समितियां करेंगी सहभागिता

समिति ने 31 जनवरी को सभी सामाजिक बंधुओं से अपने कारखाने एवं प्रतिष्ठान बंद रखकर सपरिवार कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है। आयोजन में आमला, चिचोली, सारणी, भैसदेही, आठनेर, मुलताई व मोरखा क्षेत्र की सहयोगी समितियां सहभागिता करेंगी।

ओम आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज में धन्वंतरी पीठाधीश्वर संत सुरेशानंद सरस्वती का आगमन

आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार और विद्यार्थियों के प्रशिक्षण पर दिया मार्गदर्शन

बैतूल। ओम आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में श्री अंबा माता आरोग्य आश्रम, नीमच मध्य प्रदेश के परम पूज्य संत धन्वंतरी पीठाधीश्वर श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर संत सुरेशानंद सरस्वती का आगमन हुआ। कांची कामकोठी पीठाधीश्वर जयेंद्र सरस्वती द्वारा अंबा माता आरोग्य आश्रम को आयुर्वेद में अतुलनीय योगदान के लिए श्री धन्वंतरी पीठम् घोषित किया गया है। संत सुरेशानंद सरस्वती विगत 52 वर्षों से आयुर्वेद के क्षेत्र में जड़ी-बूटियों के माध्यम से रुग्ण मानवता की सेवा कर रहे हैं। इस सेवा कार्य को निरंतर रखने के लिए आपने 27 वर्ष पूर्व ग्राम निपानिया आबाद, जिला नीमच में श्री अंबा माता आरोग्य धाम श्री धन्वंतरी पीठम् की स्थापना की, जहां दूर-दूर से रोगग्रस्त व्यक्ति आकर आरोग्य लाभ प्राप्त करते हैं। आप नई पीढ़ी में आयुर्वेद को स्थापित करने, उसके प्रभाव और परिणाम का प्रत्यक्ष अनुभव कराने, विश्वास बढ़ाने और जागरूकता लाने के उद्देश्य से विभिन्न महाविद्यालयों के बीएएमएस एवं पीजी विद्यार्थियों को प्रायोगिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान निःशुल्क नाड़ी परीक्षण के माध्यम से रोगों की पहचान एवं जड़ी-बूटियों द्वारा निदान की प्रक्रिया पर विद्यार्थियों को जानकारी दी गई। संत सुरेशानंद सरस्वती ने मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार सहित अनेक प्रांतों में आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार किया है। साथ ही कनाडा, अमेरिका, जर्मनी और नेपाल जैसे देशों से भी रोगी आश्रम पहुंचकर आयुर्वेदिक चिकित्सा का लाभ लेते हैं। कार्यक्रम की रूपरेखा प्राचार्य के आदेशानुसार डॉ. चेतना एवं डॉ. अमित श्रीवास्तव द्वारा तैयार की गई। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष गणेश प्रसाद मालवीय, कोषाध्यक्ष सोनू पाल एवं प्राचार्य डॉ. विजय माने उपस्थित रहे। इस अवसर पर ओम आयुर्वेद परिवार गर्व और खुशी से सराबोर नजर आया। कार्यक्रम में डॉ. शशिभूषण साहू, डॉ. कमलेश सोनार, डॉ. डॉली झाड़े, डॉ. स्नेहलता भोई, डॉ. पपिहा, डॉ. नरेंद्र नरवरे, डॉ. नीलम, डॉ. शशिभूषण, डॉ. संदीप पल, डॉ. दीपक साहू, डॉ. स्नेहल, डॉ. स्नेहलता, डॉ. धर्मेंद्र, डॉ. उदय देशमुख, डॉ. मेश्राम सहित समस्त शिक्षकगण एवं बीएएमएस के सभी व्यावसायिक वर्ष के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

साध्वी देवादिति दीदी कल आएंगी

महिला पतंजलि योग समिति का जिला स्तरीय महिला सम्मेलन होगा

बैतूल। महिला पतंजलि योग समिति के तत्वावधान में कल 30 जनवरी को जिला स्तरीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम दोपहर 3 बजे जिला कार्यालय रामाश्रय परिसर, रानीपुर रोड बैतूल में आयोजित होगा। इस अवसर पर परम श्रद्धेय स्वामी रामदेव जी की शिष्या, महिला पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से साध्वी देवादिति दीदी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगी। जिला योग प्रभारी संगीता अवस्थी ने बताया कि साध्वी देवादिति दीदी ने संन्यासी जीवन की पराकाष्ठा पर पहुंचकर समाज, हिंदुत्व और सनातन के लिए अपने जीवन को समर्पित किया है। वे योग, आयुर्वेद और स्वदेशी की क्रांतिकारी विचारधारा के माध्यम से समाज की महिलाओं को

जागरूक और सशक्त बनाने का संदेश देंगी। उनके सानिध्य में महिलाओं को योग के जरिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक जीवन को संवारने की प्रेरणा मिलेगी। महिला पतंजलि बैतूल की मीडिया प्रभारी हर्षा मनोज अग्रवाल ने बताया कि इस जिला स्तरीय सम्मेलन में अधिक से अधिक माताएं और बहनें शामिल होकर साध्वी देवादिति दीदी के विचारों से लाभ लें। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक घोड़ाडोंगरी से श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उइके, महिला राज्य प्रभारी डॉ. पुष्पांजलि शर्मा उपस्थित रहेंगी। इसके अलावा साध्वी देवादिति दीदी के अन्य कार्यक्रम भी निर्धारित हैं। 30 जनवरी को दोपहर 12 बजे शाहपुर महाविद्यालय में तथा 31 जनवरी 2026 को बैतूल गर्ल्स कॉलेज में दोपहर 1 बजे उनका कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। आयोजन समिति ने सभी महिलाओं से समय पर पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

टायर फटने से गोभी से भरा ट्रक पलटा, बाइक सवार दंपती की दर्दनाक मौत, तीन घायल

बैतूल/मुलताई। छिंदवाड़ा मार्ग पर बुकाखेड़ी बांध के पास एक भीषण सडक़ हादसे में बाइक सवार पति-पत्नी की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि ट्रक चालक, क्लीनर सहित तीन अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा उस समय हुआ जब गोभी से भरा ट्रक अचानक टायर फटने से अनियंत्रित होकर सडक़ पर पलट गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुलताई से गोभी भरकर एक ट्रक छिंदवाड़ा की ओर जा रहा था। बुकाखेड़ी बांध के समीप ट्रक का अचानक टायर फट गया, जिससे वाहन असंतुलित होकर पलट गया। इसी दौरान सामने से आ रही बाइक ट्रक की चपेट में आ गई। हादसे में बाइक पर सवार श्याम (45 वर्ष) एवं उनकी पत्नी मोनिका (40 वर्ष), निवासी भरकावाड़ी, ट्रक के नीचे दब गए। दोनों घोड़ा पिपरिया में तेरहवीं कार्यक्रम में शामिल होकर वापस लौट रहे थे। हादसा इतना भीषण था कि पति-पत्नी की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं ट्रक में सवार एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया, जबकि ट्रक चालक और क्लीनर को भी चोटें आई हैं। इसके अलावा ट्रक से गिरकर घायल हुए मनीष पिता पूर्णलाल (23 वर्ष), निवासी गजानन बस, को उपचार के लिए शासकीय अस्पताल मुलताई में भर्ती कराया गया है। चिकित्सकों के अनुसार मोनिका को अस्पताल लाने से पहले ही मृत घोषित कर दिया गया था, जबकि अन्य घायलों का इलाज जारी है। हादसे के बाद मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीणों की भीड़ एकत्रित हो गई, जिससे कुछ समय के लिए यातायात भी प्रभावित रहा। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मर्ग कायम कर जांच प्रारंभ कर दी है। इस दर्दनाक हादसे से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई है।

कबीर साहेब जी का निर्वाण दिवस, 35 जोड़ों का दहेज मुक्त विवाह, 273 यूनिट हुआ रक्तदान

संत रामपाल महाराज के सान्निध्य में हुआ महा विशाल समागम, लाखों लोगों ने किया भंडारा

बैतूल। सतलोक आश्रम उड़दन में बुधवार पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में संत रामपाल महाराज के पावन सानिध्य में चल रहे महाविशाल समागम का दूसरा संपन्न हुआ। जिसमें लाखो की संख्या में श्रद्धालुओं ने भंडारा ग्रहण किया। आश्रम के सेवादारों ने बताया कि आज से 508 वर्ष पूर्व कबीर साहेब जी सशरीर सतलोक गए थे जिसकी स्मृति में ये तीन दिवसीय महा विशाल समागम संत रामपाल महाराज के पावन सानिध्य में मनाया जा रहा है। जिसमे सभी को निमंत्रण दिया गया है। इस महा विशाल भंडारे में शुद्ध देशी घी से बने सब्जी, पूड़ी, दाल,चावल, मिष्ठान का भंडारा दिया जा रहा है। साथ ही संत गरीबदास जी महाराज जी द्वारा लिखित अमर ग्रंथ साहिब की अमरवाणी का अखंड पाठ चल रहा है। कार्यक्रम के दूसरे दिन संत रामपाल महाराज के समाज सुधार कार्यों के अंतर्गत मात्र 17 मिनट में गुरुवाणी द्वारा 35 जोड़ों का दहेज मुक्त विवाह भी संपन्न

कराया गया और जिला चिकित्सालय बैतूल स्टाफ की मौजूदगी में अनुयायियों द्वारा 273 यूनिट रक्तदान भी किया गया और 3585 लोगों के देहदान के संकल्प फार्म भरे गए। समागम में आने वाले श्रद्धालुओं के बैठने के लिए भव्य पंडाल की व्यवस्था है, समागम में आने वाले श्रद्धालुओं में लिए जूता घर,पार्किंग,मोबाइल चार्जिंग,शौचालय आदि की पर्याप्त सुविधा के साथ सृष्टि रचना की आध्यात्मिक प्रदर्शनी व निःशुल्क नामदीक्षा, निशुल्क नेत्र व दंत चिकित्सा के साथ अन्य बीमारियों के उपचार की व्यवस्था भी की गई है। समागम के लिए आश्रम को इस प्रकार से सजाया गया है जैसे दीवाली का त्यौहार हो। समागम के दूसरे दिन खबर लिखे जाने तक 2750 लोगों ने संत रामपाल महाराज से निःशुल्क नामदीक्षा ग्रहण की। इतनी अधिक तादाद में श्रद्धालुओं के आने के बाद भी यातायात सुविधा में किसी प्रकार की अव्यवस्था व संगत में भगदड़ देखने को नहीं मिली। संत रामपाल महाराज के कार्यक्रम में सारी व्यवस्था उनके सेवादार भक्त ही करतें है। अपने गुरुदेव जी के आदेशानुसार आने वाली सर्व संगत शांतिपूर्वक आकर अमर वाणी को श्रवण कर भंडारा प्रसादी लेकर वापस अपने घर जाती रही। आज गुरुवार को इस महासमागम का अंतिम दिन है। आयोजकों ने सभी को उपस्थित होने का आग्रह किया है।

संक्षिप्त समाचार

''कई फैक्ट्रीज की चिमनी उगल रही जहर 14 सिगरेट पीने जितनी जहरीली हुई हवा'

रायसेन (निप्र)। नेशनल ग्रीन ट्रव्यूनल हरित अधिकरण सेन्ट्रल जोन भोपाल के निर्देशानुसार मीडिया के माध्यम से संज्ञान में आए तथ्य कई फैक्ट्रीज की चिमनी उगल रही जहर 14 सिगरेट पीने जितनी जहरीली हुई हवा के संबंध में माननीय राष्ट्रीय हरित अधिकरण मध्य क्षेत्रीय न्यायपीठ के समक्ष प्रस्तुत आवेदन जिसके आधार पर मामला क्रमांक 173/2025सीजेड पंजीबद्ध हुआ है। इस प्रकरण में माननीय न्यायालय के समक्ष प्रक्रिया और नियमों के अनुसार 13 मार्च 2026 को जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाना है। माननीय न्यायालय के आदेश के पालन में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय द्वारा तीन सदस्यीय संयुक्त जांच दल का गठन किया गया है। जिसमें अनुविभागीय अधिकारी गौहरगंज श्री चन्द्रशेखर श्रीवास्तव अध्यक्ष/कलेक्टर प्रतिनिधि, क्षेत्रीय अधिकारी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड मण्डीदीप डॉ केएन कटारे तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारी मण्डीदीप डॉ प्रशांत जैन को सदस्य सचिव बनाया गया है। गठित जांच दल माननीय न्यायालय के पारित आदेश में वार्णित बिन्दुओं पर बिन्दुवार जांच कर माननीय न्यायालय में नियत पेशी 13 मार्च 2026 के पूर्व जांच प्रतिवेदन तैयार कर कलेक्टर महोदय को अवलोकन कराकर माननीय न्यायालय के समक्ष पेशी दिनांक को अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करेगी।

मरीजों के उपचार हेतु 2 लाख 40 हजार रुपये स्वीकृत

विदिशा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के स्वेच्छानुदान मद से विदिशा जिले के 6 मरीजों के उपचार के लिए कुल 2 लाख 40 हजार रुपये की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई है। स्वीकृत राशि संबंधित मरीजों को लिए इलाजरत अस्पतालों हेतु सीधे जारी की गई है, जिससे मरीजों को समय पर आवश्यक चिकित्सा सुविधा मिल सके। यह सहायता गंभीर बीमारी से पीड़ित एवं आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों के लिए संबल साबित होगी। मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान योजना के माध्यम से जरूरतमंदों को त्वरित राहत प्रदान कर मानवीय संवेदनाओं के साथ स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही।

ग्राम पहाड़पुर में मनाई गई नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी की जयंती

बैतूल (निप्र)। आजाद हिंद फौज के सिपाही रहे स्वतन्त्रता सेनानी राधा किशन सिंह शास्त्री जी के गांव पहाड़पुर में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी की जयंती मनाई गई। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार एवं मेरा युवा भारत बैतूल द्वारा पहाड़पुर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवा एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ शासकीय महाविद्यालय सारनी के जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री कमलेश सिंह, मेरा युवा भारत बैतूल की जिला युवा अधिकारी सुषमा गवली,जनपद सदस्य पवित्र बहादुर, युवा नेता दिनेश सिंह,उप प्राचार्य श्री भालेकर ने नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता कमलेश सिंह ने कहा कि 'तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हे आजादी दूंगा' के नारा देने वाले सुभाष चन्द्र बोस एक सच्चे देशभक्त एवं महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। उनका साहस और संघर्ष आज भी देशवासियों को प्रेरित करता है। श्री सिंह ने नेताजी के सहयोगी रहे स्वतन्त्रता सेनानी राधाकिशन सिंह जी के जीवन चरित्र पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम को सुषमा गवली, उप प्राचार्य श्री भालेकर, पवित्र मिस्त्री एवं मानस सिंह ने भी सम्बोधित किया। ग्रामीण युवा हरेंद्र सिंह, कीरोन मण्डल सहित कई लोग उपस्थित थे।संचालन सुरेश सेन ने किया।

सुभाष चंद्र बोस की जयंती एवं वसंत पंचमी के अवसर पर पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित

सीहोर (निप्र)। सीहोर में पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ द्वारा बसंत पंचमी एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के पावन अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. सिद्धनाथ खजूरिया ने वसंत पंचमी के सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक महत्व के बारे में बताते हुए विद्या, विवेक और संस्कार की भारतीय अवधारणा को विशेष रूप से रेखांकित किया। प्रभारी प्राचार्य डॉ. नितिन बातव ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन, राष्ट्रभक्ति, त्याग एवं साहसपूर्ण नेतृत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा वसंत पंचमी विषय पर प्रभावशाली भाषण दिए गए तथा लोकगीतों की प्रस्तुति भी दी गई। कार्यक्रम में श्री शंकर प्रजापति, डॉ.शीलचंद गुप्ता, डॉ. तृप्ता झा, डॉ. जितेन्द्र आर्य सहित अन्य प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

लोकतंत्र के लोक उत्सव भारत पर्व में महाराष्ट्र के लोक नृत्य पोवाडा एवं उस्ताद सलीम उल्लाह के देशभक्ति गीतों ने बांधा समां

दर्शक गण देर रात तक पोवाड़ा नृत्य एवं देश भक्ति के गीतों से सरोबार रहे

नर्मदापुरम (निप्र)। लोकतंत्र का लोक उत्सव भारत पर्व नर्मदापुरम जिले में भी सेठानी घाट में आयोजित किया गया। भारत पर्व के कार्यक्रम में स्वराज संस्थान के कलाकारों ने अपने नृत्य एवं देशभक्ति गीतों से देखने वालों का देर रात तक मनोरंजन किया। भोपाल से आई ख्याति प्राप्त नृत्यांगना मांडवी अजय अरोनकर ने अपने नृत्य दल के कलाकारों के साथ मिलकर महाराष्ट्र की संस्कृति में वीर और शूरवीर योद्धाओं, लोक कल्याण की देवी अहिल्याबाई, आम मजदूर श्रमिकों एवं भगवान श्री कृष्ण की स्तुती में किए जाने वाले पोवाडा लोक नृत्य की अद्भुभुत प्रस्तुति दी। पोवाड़ा लोक नृत्य वीर रस से ओतप्रोत लोक नृत्य है, इस नृत्य के माध्यम से मराठा शूरवीरों के साहस एवं पराक्रम तथा आत्म स्वाभिमान को परिलक्षित किया गया था।

यह वीर रस से ओतप्रोत लोक नृत्य पोवाड़ा ना सिर्फ मराठा शूरवीरो पर आधारित है अपितु सबसे पहले यह लोक नृत्य एवं गायन की स्तुति भगवान श्री कृष्णा के सम्मान पर की जाती है उसके बाद ही अन्य योद्धाओं या वीर स्त्रियों के लिए लोक नृत्य किए जाते हैं। माडवी अजय अरोनकर ने अपने नृत्य दल के कलाकारों के साथ सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण को समर्पित पोवाडा नृत्य की प्रस्तुति की, उनके कलाकारों ने ओजस्वी नृत्य एवं गायन से ऐसा समां बांधा की दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए।

भगवान श्री कृष्ण पर आधारित पोवड़ा लोक नृत्य मुख्यतः महाभारत युद्ध के समय कुरुक्षेत्र में अर्जुन द्वारा अपने परिजनों पर शस्त्र ना उठाने एवं श्री कृष्ण द्वारा उन्हें गीता का ज्ञान देने एवं धर्म के लिए खड़े होने की सीख पर आधारित था। जब श्री कृष्ण ने अर्जुन को सीख दी तब उन्हें धर्म के लिए लड़ने की प्रेरणा मिली। उत्साह से भर देने वाला पोवाड़ा लोक नृत्य तन और मन में अद्भुत ऊर्जा का संचार कर देता है। पोवड़ा लोक नृत्य की खासियत है कि पहले पोवाड़ा लोक नृत्य एवं गीत भगवान श्री कृष्णा को सम्मान देने के लिए गया जाता है।

माडवी अजय अरोनकर ने भगवान श्री कृष्ण पर नृत्य की प्रस्तुति की उसके बाद मराठा शूरवीर छत्रपति शिवाजी महाराज एवं देवी अहिल्याबाई के लोक शासन और जन कल्याण को परिलक्षित करते हुए पोवाडा नृत्य एवं गीत की प्रस्तुति की।

उन्होंने अपने साथी कलाकारों के साथ मिलकर साधारण मजदूर और श्रमिकों, पराक्रमी स्त्री पर आधारित पोवाडा नृत्य की अद्भुत प्रस्तुति की। जिसकी दर्शकों ने ताली बजाकर सराहना की। भोपाल से आए उस्ताद सलीम उल्लाह ने देशभक्ति गीतों की शुरुआत वंदे मातरम के गायन से की, उसके बाद उन्होंने संदेशे आते हैं एवं देशभक्ति से सरोवर अनेक गीतों की प्रस्तुति दी। एक लय एवं एक ताल में तथा एक सुर में गाए उनके गीतों को सभी लोगों ने बहुत पसंद किया।

देर रात तक उस्ताद सलीम उल्लाह ने अपने देशभक्ति गीतों से लोगों का भरपूर उत्साह वर्धन किया। उनके गीतों को सुनकर सभी लोगों के मन में जोश की भावना भर गई। नर्मदापुरम के म्यूजिकल जोन ग्रुप ने भी अपने देशभक्ति गीतों से देर रात तक लोगों का मनोरंजन किया। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री हिमांशु जैन ने मांडवी अजय अरोनकर एवं उस्ताद सलीम उल्लाह का पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मान किया।

जनसंपर्क विभाग की लगाई प्रदर्शनी रही आकर्षण का केंद्र

लोकतंत्र के लोक उत्सव भारत पर्व के आयोजन अवसर पर संभागीय जनसंपर्क कार्यालय नर्मदापुरम के द्वारा सेठानी घाट पर मध्य प्रदेश सरकार की विकास कार्यों एवं योजनाओं से संबंधित प्रदर्शनी लगाई गई थी। प्रदर्शनी सभी के आकर्षण का केंद्र रही। सभी लोगों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

जनसुनवाई में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने नागरिकों की समस्याओं का किया निराकरण

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में मंगलवार को आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा नागरिकों की समस्याओं की सुनवाई कर उनका निराकरण किया गया। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जनसुनवाई में आए आवेदकों से धैर्यपूर्वक उनकी समस्याओं पर चर्चा कर निराकरण किया। कुछ प्रकरणों में उन्होंने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण करने के निर्देश दिए। साथ ही अन्य तहसीलों से आए आवेदकों की समस्याओं के निराकरण हेतु वीसी के माध्यम से निर्देशित किया। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्री मनोज कुमार उपाध्याय तथा जिला अधिकारी उपस्थित रहे। अनुभागों से एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ सहित अन्य अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जनसुनवाई में उपस्थित रहे।

दिव्यांग बच्चों की मनमोहक प्रस्तुति पर मंत्री श्री कुशवाह ने की स्वनिधि से 11-11 हजार रूपये की राशि प्रदान की घोषणा

सीहोर (निप्र)। राज्य स्तरीय दिव्यांगजन स्पर्श मेले में सीहोर जिले के अस्थि बाधित दिव्यांग बालक जीत तोनगरे ने मनमोहक आर्गन वादन और दृष्टिबाधित बालिका कशफना ने अपने गीतों की मनमोहक प्रस्तुती दी। इसके साथ ही बालिका हंसिका टिमराई ने अपने डांस की प्रस्तुती दी। इस अवसर पर सामाजिक न्याय मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने दिव्यांग बच्चों की इस मनमोहक प्रस्तुति पर बालक जीत और बालिका कशफना को स्वनिधि से 11-11 हजार रूपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान करने की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा भोपाल में 03 दिवसीय राज्य स्तरीय दिव्यांगजन स्पर्श मेला-2026 आयोजित किया गया है। इस मेले में प्रदेश के सभी जिलों से आए विभिन्न श्रेणियों के दिव्यांग बच्चों की खेलकूद, गायन एवं अनेक प्रतियोगिताएं उत्साहपूर्वक आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में श्रवण बाधित, दृष्टि बाधित, अस्थिबाधित एवं बौद्धिक दिव्यांग बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास एवं कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस अवसर पर प्रमुख सचिव श्रीमती सोनाली पोक्षे वायंगणकर, उपसचिव सुश्री अंकिता धाकरे एवं आयुक्त डॉ अजय खेमरिया ने इन बच्चों की इस मनमोहक प्रस्तुति पर उन्हें प्रोत्साहित भी किया। इस दौरान सीहोर जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र के कर्मचारी उपस्थित थे।

जिले के सभी सीएससी में संचालित होंगे आधार केंद्र - कलेक्टर श्री गुप्ता

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज आयोजित टीएल (टाइम लिमिट) बैठक में नागरिक सुविधाओं को और अधिक सुलभ बनाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए। उन्होंने कहा कि जिले के सभी कॉमन सर्विस सेंटर पर आधार पंजीयन एवं अपडेट कार्य के लिए आधार केंद्र संचालित किए जाएं, ताकि आमजन को आधार संबंधी सेवाएं अपने नजदीकी स्तर पर उपलब्ध हो सकें। बैठक में विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने स्पष्ट किया कि आधार कार्ड आज शासकीय योजनाओं के लाभ से लेकर बैंकिंग और शैक्षणिक कार्यों तक एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन चुका है।

लोकतंत्र का लोकोत्सव ''भारत पर्व'' सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। गणतंत्र दिवस की संध्या में रायसेन स्थित वन परिसर में मप्र शासन के संस्कृति विभाग, जिला प्रशासन और जनसम्पर्क विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किए गए लोकतंत्र का लोकोत्सव 'भारत पर्व' का जिला पंचायत अध्यक्ष श्री यशवंत मीणा तथा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सविता सेन द्वारा दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया गया। जनप्रतिनिधियों तथा अधिकारियों द्वारा भारत पर्व में अपनी प्रस्तुती देने आए लोक कलाकारों का शॉल पहनाकर एवं माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, एसडीएम श्री मनीष शर्मा सहित अधिकारी-कर्मचारी और नागरिक उपस्थित रहे। भारत पर्व में सुप्रसिद्ध कलाकारों द्वारा दी गई देशभक्ति गीतों और लोकगीतों की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। भारत पर्व की पहली कड़ी में इल्यूजन थियेटर आर्टस एण्ड कल्चर संस्थान से गायक कलाकार डॉ रंजीत, महिमा पाण्डेय, अमित सिठा, मोहिनी तथा उनके साथियों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत गीत दिल दिया है, जां भी देंगे ऐ वतन तेरे लिए....., जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा....., मेरा रंग दे बसंती चोला..... सहित अन्य देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके पश्चात लोकगंजन नाट्य संस्थान के लोकगायक/रंगनिर्देशक श्री प्रवीण चौबे और उनके साथियों की निमाड़ी आदिवासी लोकशैली के गीतों तथा टंट्या मामा के यशोगान आधारित लोकगीतों की प्रस्तुति पर पूरा हॉल श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। भारत पर्व के समापन अवसर पर एसडीएम श्री मनीष शर्मा द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। वन परिसर में लगाई गई विकास प्रदर्शनी रायसेन स्थित वन परिसर में आयोजित लोकतंत्र का लोकोत्सव 'भारत पर्व' के दौरान विकास प्रदर्शनी लगाई गई। जिसका जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों ने अवलोकन किया। विकास प्रदर्शनी के माध्यम से नागरिकों को प्रदेश सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं तथा विकास कार्यों की जानकारी दी गई।

जनसुनवाई में प्राप्त गैस टंकी ब्लास्ट आवेदन का हुआ निराकरण

विदिशा (निप्र)। जिला आपूर्ति अधिकारी श्री अनिल तंतुवाय ने बताया कि कुरवाई में तहसील स्तरीय जनसुनवाई कार्यक्रम में प्राप्त आवेदन पर त्वरित एवं प्रभावी निराकरण के तहत एक गैस टंकी ब्लास्ट से संबंधित प्रकरण का समाधान संतोषजनक रूप से कर लिया गया है। कुरवाई तहसील के आवेदक भूपेंद्र सिंह पुत्र भगवान सिंह, निवासी ग्राम करैया, द्वारा 1 जुलाई 2025 को जनसुनवाई में उपस्थित होकर घरेलू गैस टंकी घर में फट जाने संबंधी शिकायती आवेदन प्रस्तुत किया गया था। आवेदन में घटना से हुए नुकसान के मद्देनजर आर्थिक राहत की मांग की गई थी। प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए जिला आपूर्ति अधिकारी श्री तंतुवाय ने विभाग द्वारा आवश्यक जांच एवं कार्रवाई कर जांच के दौरान पाया गया कि शिकायतकर्ता को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड कंपनी के माध्यम से बीमा क्लेम के रूप में 2 लाख रुपये की राशि प्रदान की जा चुकी है। शिकायतकर्ता भूपेंद्र सिंह से दूरभाष पर संपर्क कर स्थिति की पुष्टि की गई, जिसमें उन्होंने बताया कि उनकी समस्या का समाधान संतुष्टि पूर्वक हो गया है तथा उन्हें प्राप्त सहायता से राहत मिली है। प्रशासन द्वारा कहा गया है कि जनसुनवाई के माध्यम से प्राप्त प्रत्येक आवेदन का संवेदनशीलता एवं प्राथमिकता के साथ निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है, ताकि आम नागरिकों को समयबद्ध न्याय और राहत मिल सके।

एसजीएस ग्राउंड गंजबासौदा में सांसद खेल महोत्सव का विधानसभा स्तरीय भव्य समापन

विदिशा (निप्र)। खेल एवं युवा कल्याण विभाग मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित सांसद खेल महोत्सव का बासौदा विधानसभा स्तरीय भव्य समापन एसजीएस ग्राउंड, गंजबासौदा में उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय सांसद और केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, बासौदा विधायक श्री हरि सिंह रघुवंशी, कुरवाई विधायक श्री हरि सिंह सप्रे, विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन, नगर पालिका अध्यक्ष, बासौदा समेत अन्य जनप्रतिनिधिगणों के अलावा विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधि विशेष रूप से उपस्थित रहे। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने विजेताओं को व्यक्तिगत रूप से मेडल और शील्ड प्रदाय की। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बताया कि सांसद खेल महोत्सव का फायनल समापन कार्यक्रम रायसेन में एक एवं दो फरवरी को आयोजित किया जाएगा। उन्होंने खेलों को जीवन का अतिमहत्वपूर्ण हिस्सा बताते हुए उन्होंने ग्रामीणों क्षेत्रों की प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करना है। समापन अवसर पर विधानसभा स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला बालक एवं बालिका वर्ग में खेला गया। इसमें बासौदा नगर मंडल विजेता एवं बासौदा ग्रामीण मंडल उपविजेता रहा, जबकि ग्यारसपुर मंडल ने बालक एवं बालिका दोनों वर्गों में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार विधानसभा स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता के बालक वर्ग के फाइनल मैच में बासौदा नगर मंडल विजेता एवं त्योंदा मंडल उपविजेता रहा, जबकि सिरनौटा मंडल ने तृतीय स्थान हासिल किया। जिला अधिकारी श्री प्रदीप सिंह रावत ने बताया कि 17 नवंबर से 27 दिसंबर तक मंडल स्तरीय क्रिकेट एवं कबड्डी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इससे पूर्व 101 ग्राम पंचायत स्तर पर रस्साकसी, चेयर रेस एवं नींबू रेस जैसी खेल प्रतियोगिताएं भी सफलतापूर्वक संपन्न कराई गईं। इस प्रकार ग्रामीण स्तर से लेकर विधानसभा स्तर तक खेल प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया गया। इन प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन में ब्लॉक समन्वयक श्रीमती नूर जहां बानो मंसूरी की प्रमुख भूमिका रही। प्रतियोगिताओं का संचालन रेफरी स्वतंत्र जैन, राहुल विश्वकर्मा, चेतन माथुर, गजेंद्र डांगी, रूबी मंसूरी, रूपेश अहिरवार, मलखान बघेल, कपिल गौड़, अभिषेक शर्मा सहित अन्य रेफरियों द्वारा किया गया। अंपायर के रूप में अनय शर्मा, अर्जुन बघेल, घनश्याम, राहुल यादव, मुदित पौराणिक एवं नमन रघुवंशी उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में खिलाड़ी, पत्रकार, विभिन्न विद्यालयों से पधारे प्राचार्य एवं जन-गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सांसद खेल महोत्सव के माध्यम से क्षेत्र में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने और युवा प्रतिभाओं को आगे लाने का सराहनीय प्रयास किया गया।

आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी में नाक-कान-गला रोगों का हो रहा आयुर्वेदिक उपचार

बैतूल (निप्र)। जिला आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी में नाक, कान और गले से संबंधित रोगों के उपचार की सुविधा उपलब्ध है। यहां आयुर्वेद शालाक्य तंत्र विभाग के अंतर्गत विशेषज्ञ चिकित्सक डॉक्टर रीना चौकीकर द्वारा मरीजों का उपचार किया जा रहा है। चिकित्सालय में आधुनिक निदान के साथ आयुर्वेदिक पद्धति से रोगों की पहचान कर क्रियाकल्प चिकित्सा के माध्यम से इलाज किया जाता है। शालाक्य तंत्र विभाग में कर्ण रोग, नासा रोग, गले के रोग, मुख रोग और शिरोरोग शामिल हैं। आयुर्वेद में क्रियाकल्प चिकित्सा स्थानीय उपचार की विशेष प्रक्रिया है, जिसमें क्रिया का अर्थ चिकित्सा तथा कल्प का अर्थ प्रक्रिया होता है। इसका उद्देश्य आंखों की सफाई, पोषण और रोगों को दूर करना बताया गया है।

डॉक्टर रीना चौकीकर ने जानकारी दी कि क्रियाकल्प चिकित्सा में नस्य कर्म के अंतर्गत नाक में औषधीय तेल डालना, शिरोरोगों में शिरोधारा तथा नेत्र रोगों में तर्पण जैसी प्रक्रियाएं शामिल हैं। इस चिकित्सा पद्धति के माध्यम से कम सुनाई देना, कान का बहना, माइग्रेन, क्रॉनिक साइनसाइटिस, टॉन्सिल की समस्या, आंखों में एलर्जी, जलन, सूखापन, मोतियाबिंद की शुरुआती अवस्था सहित अन्य विकारों का उपचार विशेषज्ञ की देखरेख में किया जाता है।

इछावर में 200 जोड़ों का सामूहिक कन्या विवाह एवं निकाह सम्पन्न

राजस्व मंत्री ने नव दंपतियों को दिया आर्शीवाद

सीहोर (निप्र)। मुख्यमंत्री कन्या विवाह एवं निकाह योजना के अंतर्गत इछावर में भव्य सामूहिक कन्या विवाह समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा शामिल हुए। उन्होंने नवदंपतियों को भावी दांपत्य जीवन के लिए शुभकामनाएं देते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। सामूहिक कन्या विवाह सम्मेलन में कुल 200 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे, जिनमें 173 जोड़ों का विवाह तथा 27 जोड़ों का निकाह संपन्न हुआ। समारोह में बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं नागरिक उपस्थित रहे। इस अवसर पर राजस्व मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में देश और प्रदेश में विकास के साथ-साथ जनकल्याण को प्राथमिकता देते हुए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना से गरीबों का पक्का मकान का सपना साकार हो रहा है तथा पात्र परिवारों को निशुल्क राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। मंत्री श्री वर्मा ने बताया कि आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से नागरिकों को अच्छे अस्पतालों में निःशुल्क उपचार की सुविधा मिल रही है। महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाने के लिए उज्ज्वला योजना चलाई जा रही है। वहीं महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु लाड़ली लक्ष्मी योजना, लाड़ली बहना योजना, मातृत्व वंदना योजना, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना सहित स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि समाज का कोई ऐसा वर्ग नहीं है, जिसे सरकार की योजना का लाभ न मिल रहा हो। शासन की योजनाएं अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से संचालित की जा रही हैं। कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष कैलाश सुराना ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्री मति रचना सुरेन्द्र मेवाड़ा, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री मति रेखा जगदीश पटेल, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष श्री मति नीलू शंकर जायसवाल सहित अनेक जनप्रतिनिधी उपस्थित थे।

प्रदेश के 30 जिलों में बारिश, 8 में ओले गिरे

फसलों को भारी नुकसान ; ग्वालियर, भोपाल सहित कई शहरों में था घना कोहरा

भोपाल (नप्र)। दो सिस्टम के एक्टिव होने से मध्य प्रदेश में बारिश, आंधी और ओलावृष्टि का दौर था। 24 घंटे के दौरान भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर, ग्वालियर समेत प्रदेश के 30 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। ग्वालियर में ढाई इंच पानी गिर गया। वहीं 8 जिलों में ओलावृष्टि दर्ज की गई। इससे गेहूं, चना और सरसों की फसलों को नुकसान पहुंचा है। बुधवार को भी घना कोहरा था।

मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल, इंदौर, खंडवा, हरदा, विदिशा, नर्मदापुरम, खंडवा, बड़वानी, रतलाम, श्योपुर, उज्जैन, दमोह, जबलपुर, नरसिंहपुर, रीवा, सतना, टीकमगढ़, छतरपुर, शाजापुर, मंदसौर, आगर-मालवा, देवास, अशोकनगर, मुरैना, भिंड, खरगोन, सीहोर, सागर, मऊगंज, धार आदि जिलों में 24 घंटे के अंदर बारिश का दौर चला।

ग्वालियर में सबसे ज्यादा ढाई इंच, गुना, शिवपुरी-सागर में 1 इंच, दतिया में पौन इंच और राजगढ़ में आधा इंच पानी गिर गया। उज्जैन, शाजापुर, आगर-मालवा, देवास, मुरैना, सीहोर, सागर, रायसेन व अन्य जिलों में ओले भी गिरे। बारिश, आंधी-ओले के मौसम के बीच बुधवार सुबह घना कोहरा भी छाया रहा।

ग्वालियर में सबसे कम विजिबिलिटी दर्ज की

गई। यानी, यहां 50 मीटर के बाद कुछ नहीं दिखा। खजुराहो, भोपाल, दतिया, नर्मदापुरम, नौगांव, रीवा, सतना, राजगढ़, सागर, गुना, रायसेन, श्योपुर, बालाघाट, उमरिया, सिवनी, मंडला, छिंदवाड़ा, दमोह, जबलपुर में कोहरा दर्ज किया गया। हालांकि, रात के तापमान में बढ़ोतरी हुई है।

ग्वालियर-शिवपुरी में स्कूलों की छुट्टी- भोपाल और इंदौर में मंगलवार को गरज-चमक के साथ बारिश हुई। जबकि ग्वालियर में लगातार बारिश के चलते ठंड बढ़ गई। हालात को देखते हुए ग्वालियर प्रशासन ने बुधवार को कक्षा 8वीं तक के स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी है।

ओले से फसल बर्बाद, उज्जैन में किसान ने की आत्महत्या, आखिरी कॉल पर कहा- अब बहन की शादी कैसे होगी

उज्जैन में आंधी, पानी और ओले से फसल बर्बाद होने के कारण बुधवार सुबह 30 साल के किसान ने आत्महत्या कर ली। उनका शव खेत में फांसी के फंदे पर मिला। फांसी लगाने से पहले किसान ने खराब फसल के वीडियो के साथ तड़प-तड़प के इस दिल से आह निकलती रही, मुझको सजा दी प्यार की, ऐसा क्या गुनाह किया गाने का वॉट्सएप स्टेटस लगाया था।पुलिस के अनुसार, मृत किसान का नाम पंकज मालवीय था। वह तराना तहसील के खेड़ा जामुनिया गांव में रहते थे। उन्होंने करीब 6 बीघा जमीन पर गेहूं की फसल लगाई थी, जो नष्ट हो गई। फसल खराब होने से पंकज काफी परेशान थे। वे मंगलवार रात घर नहीं लौटे। सुबह जब परिवार के लोग खेत पहुंचे तो उसका शव मिला।पंकज के परिवार में मां, पत्नी, दो छोटे बच्चे 8 वर्षीय बेटा और 5 वर्षीय बेटी है। उसकी दो बहनें हैं। इनमें से एक की अप्रैल में शादी होने वाली है। पिता की मौत हो चुकी है।पंकज के पिता की मौत हो चुकी है। वह घर में अकेला कमाने वाला था। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। प्रशासन ने पीड़ित परिवार को हरसंभव मदद देने का आश्वासन दिया है।

कैलाश खेर पहुंचे भोपाल, प्रधानमंत्री के नेतृत्व पर कहा

वह लकीर के फकीर नहीं, लक्ष्य लेकर आए, गुलामी की मानसिकता से निकल रहा है भारत

भोपाल (नप्र)। भोपाल से कैलाश खेर का रिश्ता सिर्फ कार्यक्रमों तक सीमित नहीं है, यह रिश्ता आत्मा, संस्कृति और इंसानियत से जुड़ा है। भोपाल आगमन पर मीडिया से बातचीत में पद्मश्री गायक कैलाश खेर ने भारत, समाज, राजनीति, संस्कृति, संगीत और चरित्र निर्माण पर खुलकर बात की।

कैलाश खेर कहते हैं कि मध्यप्रदेश ही नहीं, भारत की हर वह धरती उन्हें प्रिय है, जहां अध्यात्म, कला, संस्कृति और मनुष्यता साथ-साथ चलती हो। चंबल जैसे इलाकों में भी पुराने मंदिर मिलते हैं। इसका मतलब ये है कि बुरे कहे जाने वाले इलाकों में भी अच्छाई छुपी होती है, बस उसे उजागर करने वाला चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जिक्र करते हुए कैलाश खेर कहते हैं कि बदलाव का श्रेय किसी एक व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता, लेकिन यह भी सच है कि कोई न कोई ऐसा होता है जो समाज को जगाता है। प्रधानमंत्री जब आए तो वो सिर्फ लकीर के फकीर बनकर नहीं आए। उन्होंने लक्ष्य रखा। पहले के प्रधानमंत्री भी अपने हिसाब से काम करते रहे होंगे, लेकिन अब एक दिशा दिखी है। कैलाश खेर के मुताबिक सबसे पहले योग, स्वच्छता और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी विषयों से शुरुआत हुई और वहीं से बदलाव की नींव पड़ी।

आज रेलवे स्टेशन सुधर रहे हैं, सफाई हो रही है, इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहा है। भारत अब सिर्फ बोल नहीं रहा, कर भी रहा है। वे कहते हैं कि दुनिया आज भारत को मान रही है—खेल, विज्ञान और अंतरिक्ष हर क्षेत्र में। इसरो नासा को पछाड़ रहा है, ये कोई छोटी बात नहीं है। यह उस नेतृत्व का परिणाम है जो देश को जगाता है, दिशा देता है। जागा हुआ ही दूसरों को जगा सकता है।

एम्स भोपाल की लिफ्ट में चेन स्नेचिंग का आरोपी गिरफ्तार

गर्लफ्रेंड पर खर्च और मेट्रो सिटी लाइफ स्टाइल का शौक बना अपराध की वजह

भोपाल (नप्र)। एम्स भोपाल परिसर में लिफ्ट के अंदर महिला अटेंडर से मंगलसूत्र झपटने के मामले में बागसेवनिया पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर चोरी किया गया मंगलसूत्र बरामद कर लिया है। जांच में सामने आया है कि आरोपी ने गर्लफ्रेंड पर खर्च, महंगी लाइफ स्टाइल और दोस्तों से ली गई उधारी चुकाने के लिए वारदात को अंजाम दिया था।

पुलिस के अनुसार, 27 जनवरी 2026 को महिला कर्मचारी की रिपोर्ट पर थाना बागसेवनिया में मामला दर्ज किया गया था। घटना एम्स अस्पताल परिसर के भीतर होने और प्रदेशभर से मरीजों व उनके परिजनों की आवाजाही को देखते हुए मामले को गंभीर मानते हुए तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया। इसके बाद थाना प्रभारी अमित सोनी के नेतृत्व में अलग-अलग टीमें गठित की गईं।

जन्म के बाद नवजात को ईदगाह परिसर में छोड़ गई मां, मुंह में दबाए कुत्ता लेकर पहुंचा मदरसा

शिवपुरी (नप्र)। देहात थानांतर्गत ईदगाह परिसर में एक महिला रूई में छिपाकर एक नवजात को लेकर आई। उसे ईदगाह परिसर में फेंक कर चली गई। नवजात को फेंकने के लिए आई महिला ईदगाह पर लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई है। पुलिस महिला की तलाश कर रही है।

रूई में लिपटा हुआ था बच्चा- बताया जाता है कि एक कुत्ता नवजात के शव को मुंह में दबाकर ईदगाह परिसर में स्थित मदरसा में ले आया। जब मदरसा के लोगों ने नवजात के शव को कुत्ते के मुंह में देखा तो उन्होंने उसे कुत्ते से छुड़ाने का प्रयास किया। इस पर कुत्ता नवजात के शव को वहीं पर छोड़कर भाग गया, जब शव को देखा गया तो वह बालक का शव निकला। बच्चा रूई में लिपटा हुआ था, ऐसे में ऐसा प्रतीत हो रहा है कि बच्चे को जिंदा ही फेंका गया है। बाद में वह भूख, प्यास और सर्दी के कारण मौत के आगोश में समा गया होगा।

प्रसव घर पर होने की संभावना- बच्चे की नाभी पर कोई काड क्लैंप नहीं होने के कारण यह माना जा रहा है कि प्रसव घर पर ही कराया गया है। हालांकि ईदगाह परिसर के पास ही एक अस्पताल होने से इस बात की भी संभावना है कि प्रसव वहां कराया गया हो। हालांकि अभी तक स्पष्ट नहीं है कि बच्चे का प्रसव अस्पताल में हुआ या फिर घर पर। वहीं, दूसरी ओर जिस तरह से बच्चे के शव को फेंका गया है, उससे लोगों में चर्चा है कि संभवतः किसी बिन ब्याही मां के पाप को छिपाने के लिए शव को फेंका गया होगा।

सिंघार का दावा : हनुमान, बाली, सुग्रीव गौंड-कोल-कोरकू आदिवासी थे

गोंड धर्म ग्रंथ सद्भावना का हवाला दिया ; कहा- रामायण में उल्लेख शबरी भील समाज से थीं

भोपाल (नप्र)। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने भाजपा पर अंधभक्ति और इतिहास को नकारने का आरोप लगाते हुए कहा है कि भगवान श्रीराम के वनवास काल में साथ देने वाली वानर सेना आदिवासी परंपरा से जुड़ी थी और यह बात केवल मान्यता नहीं बल्कि आदिवासी समाज के धार्मिक ग्रंथों में दर्ज ऐतिहासिक तथ्य है।

तथ्यों के आधार पर अपनी बात रखता हूं

उमंग सिंघार ने कहा कि वे हमेशा प्रमाण, इतिहास और तथ्यों के आधार पर अपनी बात रखते हैं, न कि अंधविश्वास या राजनीतिक सुविधा के अनुसार। उन्होंने गोंड धर्म के ग्रंथ सद्विचार के पृष्ठ संख्या 10 का हवाला देते हुए बताया कि उसमें स्पष्ट उल्लेख है कि बाली, सुग्रीव, अंगद और महावीर हनुमान जैसे वानर वीर गोंड, कोल और कोरकू समाज से जुड़े धर्म योद्धा थे।

रामायण में उल्लेख शबरी भील समाज से थीं

सिंघार ने माता शबरी का उदाहरण देते हुए कहा कि रामायण में स्वयं वर्णित है कि शबरी भी भील समाज से थीं, जिनके प्रेमपूर्वक दिए बेर भगवान राम ने स्वीकार किए थे। यह आदिवासी समाज के योगदान और सम्मान का प्रमाण है।

होमो सेपियंस शब्द यह बताता था है कि मानव की उत्पत्ति वानर वंश से हुई

उमंग सिंघार ने विज्ञान का हवाला देते हुए कहा कि मानव विकास की प्रक्रिया भी इस सांस्कृतिक सत्य की पुष्टि करती है। होमो सेपियंस शब्द यह संकेत देता है कि मानव की उत्पत्ति वानर वंश से जुड़ी विकासात्मक प्रक्रिया से संबंधित है, जो कोई राजनीतिक बयान नहीं बल्कि वैज्ञानिक निष्कर्ष है।

बीजेपी को दी चुनौती

नेता प्रतिपक्ष ने भाजपा नेताओं को चुनौती देते हुए कहा कि यदि वे ईमानदारी से इतिहास और धर्मग्रंथों के पन्ने पलटें, तो इन तथ्यों को झूठ कहने का साहस नहीं कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि अगर भाजपा यह मानने को तैयार नहीं है कि हनुमान जी सहित वानर सेना आदिवासी परंपरा से जुड़ी थी, तो उन्हें गोंड समाज से उनके धर्मग्रंथों के बारे में पूछना चाहिए।

सिंघार ने कहा कि किसी भी समुदाय के इतिहास को नकारना केवल अज्ञानता नहीं बल्कि उस समाज के अस्तित्व और सम्मान का अपमान है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा बार-बार आदिवासी समाज की ऐतिहासिक भूमिका को कमतर दिखाने का प्रयास कर रही है, जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।